श्री उपसभापति : माननीय मंत्री जी, 1.00 बज चुका है, Question Hour is over. The House stands adjourned to meet at 2.30 p.m.

[*Answers to Starred and Un-starred Questions (Both in English and Hindi) are available as Part -I to this Debate, published electronically on the Rajya Sabha website under the link* https://rajyasabha.nic.in/Debates/OfficialDebatesDateWise]

The House then adjourned for lunch at one of the clock.

The House reassembled at thirty-three minutes past two of the clock,
MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair.*

PRIVATE MEMBERS' RESOLUTION

Regarding establishing Research Foundations at the State and district levels on the lines of the National Research Foundation for reviving the Indian knowledge tradition

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We will take up the Private Members' Resolution. Shri Rakesh Sinha to move a Resolution urging the Government, *inter alia*, to establish research foundations at the State and district level on the lines of National Research Foundation to revive Indian knowledge traditions to provide an opportunity to move to students of all disciplines to carry out research in part-time mode and acquire diploma or degree for the work, to grant national recognition to traditions pertaining to art, literature, culture and festivals and to form civilization-culture cell with adequate financial assistance to groups associated with such traditions and micro-cultures.

श्री राकेश सिन्हा (नाम निर्देशित) : महोदय, मैं निम्नलिखित संकल्प उपस्थित करता हूँ :-

"इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि:-

(i) भारत एक प्राचीन सभ्यता है जो हजारों वर्षों की सभ्यतागत यात्रा के माध्यम से एक ज्ञान परंपरा के रूप में विकसित हुई,जो दर्शन से लेकर विज्ञान, कृषि से लेकर कला सहित मानव जीवन से संबंधित सभी क्षेत्रों में अपनी उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध रही है;

(ii) लंबी औपनिवेशिक दासता के कारण भारतीय ज्ञान परंपरा को उपेक्षा का शिकार होना पड़ा क्योंकि औपनिवेशिक संस्कृति ने इसके प्रति हीनता का भाव उत्पन्न करने की कोशिश की;

(iii) औपनिवेशिक काल और उससे पूर्व भारत के प्रसिद्ध ज्ञान केन्द्रों को राजनीतिक, सैन्य और सांस्कृतिक हमलों का सामना करना पड़ा,विश्व प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय को जला दिया जाना उसका एक ऐसा उदाहरण है जिसके बारे में कई पीढ़ियों को जानकारी तक नहीं मिली और हसमुख संकालिया ने 1934 में इस पर एक छोटी पुस्तक भी लिखी थी;

(iv) नालंदा की तरह ही अनेक प्रमुख विश्वविद्यालय थे, जैसे विक्रमशिला, तक्षशिला, केरल में कान्थाल्लूर शाला (9वीं से 12वीं शताब्दी के बीच) आदि;

(v) औपनिवेशिक काल के दौरान मैकाले द्वारा पाश्चात्य शिक्षा पद्धति लाई गई, जिसका उद्देश्य भारतीयों को अपनी ज्ञान-परंपरा से दूर करना था और महात्मा गांधी ने 1931 में दिये गये अपने भाषण में इसे एक सुंदर वृक्ष की मृत्यु के रूप में अभिव्यक्त किया था;

(vi) भारत अंग्रेजों के आने से पूर्व शिक्षा के क्षेत्र में जिस मुकाम पर था, उसे जिलाधीशों की पहली सर्वेक्षण रिपोर्ट (1 जुलाई, 1936) से समझा जा सकता है, जिसमें कहा गया था कि बंगाल-बिहार में एक लाख स्कूल थे और मद्रास के 21 जिलों की रिपोर्ट में कहा गया था कि केवल मद्रास प्रेसिडेंसी में ही 11,575 विद्वान और 1,57,195 छात्र थे और उच्च शिक्षा के करीब 1904 संस्थान थे;

(vii) अंग्रेजी शिक्षा और यूरोप से उपजे विचारों ने राजनीतिक दासता के साथ-साथ विचारों और विमर्शों को भी गुलाम बना दिया और स्वतंत्रता के बाद भी यह भाव हावी रहा;

(viii) वेद, भगवद्गीता, महाभारत, पुराण, रामचरितमानस इत्यादि ग्रंथों के अतिरिक्त ज्ञान-विज्ञान के हजारों ग्रंथ लिखे गये, उदाहरण के लिए पंचतंत्र जिसका दुनिया की पचास भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और 570 ई. में इसका दूसरा अनुवाद फ़ारसी भाषा में किया गया था;

(ix) औपनिवेशिक प्रभाव और निरंतर उपेक्षा के बावजूद भारत की ज्ञान-परंपरा अपने वैशिष्ट्य के कारण जीवित रही है और आज भी विद्या के परंपरागत केन्द्र ग्रामीण अंचलों में अस्तित्व में हैं;

(x) देश के सभी हिस्सों में ज्ञान परंपरा से जुड़ी पुस्तकें, पाण्डुलिपियां और जानकारी उपलब्ध है और बहुत सारी जानकारी श्रुतियों के रूप में उपलब्ध है;

(xi) समय के साथ-साथ वे पाण्डुलिपियां और जानकारी नष्ट हो गयी है;

(xii) अनेक गांवों में आज भी दार्शनिक परंपराओं को जीवित रखा गया है, उदाहरण के लिए बिहार के मिथिला में *सरिसब पाही* गांव में *न्याय दर्शन* के अध्ययन की परंपरा जारी है;

(xiii) केरल और काशी में *शास्त्रार्थ*(बौद्धिक चर्चा) की परंपरा की अनेक ऐतिहासिक घटनाओं और परंपराओं का उल्लेख *जन-श्रुतियों* में है और आज भी कई स्थानों पर इस परंपरा को जीवित रखा गया है;

(xiv) असम के मयांग में तंत्र-विद्या का अध्ययन सदियों से हो रहा है और पश्चिमी बंगाल के *नया गाँव* में 250 *पटुआ* (चित्रकार) सदियों से चित्रकारी और संगीत के द्वारा उसकी अभिव्यक्ति की परंपरा को बनाए रखे हैं;

(xv) जनजातीय ज्ञान-परंपरा भी अनेक सांस्कृतिक, भौगोलिक,जलवायु संबंधी और आर्थिक गतिविधियों से जुड़े विशिष्ट तौर-तरीकों और उपयोगी एवं ऐतिहासिक जानकारी से भरी पड़ी है;

(xvi) देश में लोकतंत्र की प्राचीनता और प्रयोगधर्मिता का एक उल्लेख इतिहासकार के. पी. जायसवाल की पुस्तक 'हिंदू पॉलिटी'में मिलता है, परन्तु इसकी अनगिनत घटनाओं और प्रयोगों की जानकारी सर्वत्र फैली हुई है;

(xvii) विद्वानों एवं संस्थाओं द्वारा भारत को सांस्कृतिक-वैचारिक दासता से मुक्त कराने के प्रयास हुए हैं परन्तु वह ज्ञान-परंपरा के पुनर्जागरण का रूप नहीं ले पाया है;

(xviii) देश के लगभग सभी हिस्सों में छोटी-छोटी जगहों पर मेले, उत्सव, सभाएं होती हैं जिनमें से कुछ सैकड़ों वर्षो से हो रही हैं;

(xix) ज्ञान-विज्ञान तथा दर्शन के क्षेत्र में व्यापकता और विशिष्टता के फैलाव का अनुभव स्थानीय तथा राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर होता है;

(xx) नयी शिक्षा नीति में शोध पर बल दिया गया है,

यह सभा सरकार से आग्रह करती है कि-

(क) भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए जिस प्रकार नयी शिक्षा नीति के तहत राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान की स्थापना की गयी है उसी प्रकार के अनुसंधान संस्थान राज्य तथा जिला स्तरों पर भी स्थापित किए जाएं;

(ख) देश के सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए स्थानीय सांस्कृतिक, ज्ञान-विज्ञान संबंधी जानकारी एवं अन्य स्थानीय जानकारियों को एकत्रित करना अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए।

(ग) सभी विद्याओं में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को इस अनुसंधान से अंशकालिक तौर पर जुड़ने का विकल्प और अवसर हो और उन्हें इस कार्य के लिए एक डिप्लोमा या डिग्री भी प्रदान की जाए।

(घ) देश के हर व्यक्ति को सूक्ष्म संस्कृति से जुड़े पहलुओं के संबंध में शोध करने या जानकारी एकत्रित करने के लिए विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के प्रकल्पों से जुड़ने का अवसर मिलना चाहिए।

(ङ) कला, सहित्य, संस्कृति, विमर्श और उत्सवों से जुड़ी जो परंपराएं सैकड़ों वर्षों से चल रही हैं, उन्हें राष्ट्रीय मान्यता मिलनी चाहिए।

(च) राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर एक सभ्यता-संस्कृति प्रकोष्ठ बनाकर ऐसी परंपराओं, सूक्ष्म संस्कृति से जुड़े पक्षों को यथेष्ट आर्थिक सहायता प्रदान की जाए।

(छ) विचारों के स्वराज की प्राप्ति के लिए देश में संगठित प्रयास हो।"

उपसभापति महोदय, सबसे पहले मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। आज हम एक ऐसे मुद्दे पर संवाद कर रहे हैं, मैं इसे बहस नहीं कहूँगा।...**(व्यवधान)**... मैं एक ऐसे मुद्दे पर संवाद कर रहा हूँ, जिस पर इस देश में लंबे समय तक लंबी बहस की आवश्यकता है। मैंने जिस विषय को सभा के सामने रखा है, वह विषय भारत की सामूहिक चेतना का विषय है। पिछले दो सालों से भारतीय मेधा उस विषय पर विमर्श कर रही है, लेकिन जिस निष्कर्ष पर भारत को मन-कर्म-वचन से पहुंचना चाहिए था, विमर्श की अल्पता के कारण हम वहाँ देर से पहुंच रहे हैं।

मैं एक छोटी सी घटना के बारे में बताकर अपना विषय रखना चाहता हूँ। 1783 में William Jones ने कालिदास की शकुंतला का अनुवाद किया था। यह वह काल था, जब जर्मनी और जर्मनी के विद्वान अपनी नाट्य शैली को फ्रांस के आधिपत्य से मुक्त कराने के लिए लगातार परिश्रम कर रहे थे। उस समय जर्मनी की नाट्य शैली पर फ्रांस का आधिपत्य था। France literature का इतना आधिपत्य था कि जर्मनी के लोग अपने आपको उस भाषायी शैली का गुलाम मानते थे। लेकिन, वर्ष 1798 में Foster ने William Jones के अंग्रेज़ी अनुवाद से 'शकुंतला' का अनुवाद जर्मन में किया और शकुंतला ने फ्रांस के विद्वानों के सैकड़ों साल के उस परिश्रम और कठिनाई को दूर कर दिया। शकुंतला ने फ्रांस के विद्वानों को नाट्य शास्त्र का रास्ता बताया और उस समय से जर्मनी अपनी शैली में फ्रांस की दासता से मुक्त हुआ। यह एक छोटी सी घटना है कि हमारे कालिदास के शकुंतला नामक नाटक ने जर्मन साहित्य पर, जर्मन विद्वानों पर क्या प्रभाव डाला।

मैं एक दूसरी पुस्तक का भी नाम लेना चाहता हूँ - 'विज्ञान भैरव तंत्र।' उपसभापति महोदय, आज पूरी दुनिया में consciousnessपर डिबेट चल रही है। न्यूरो साइंस बार-बार चेतना के ऊपर शोध कर रही है, विमर्श कर रही है। 'विज्ञान भैरव तंत्र' में 112 प्रकार की consciousness की बात कही गई है। शिव-पार्वती संवाद में पार्वती जी ने शिव जी से पूछा है कि हम स्पेस और टाइम से ऊपर जाकर यथार्थ को किस प्रकार से देख सकते हैं? इस पर शिव जी का पार्वती जी को उत्तर होता है कि हम 112 प्रकार की meditations से, साधना से, टाइम और स्पेस की सीमा से, transcending the time and space, यथार्थ की अनुभूति कर सकते हैं। भारत की यह जो ज्ञान परंपरा थी, उसी ज्ञान परंपरा से संबंधित मेरा यह विषय भी है। उसी ज्ञान परंपरा पर जो आघात औपनिवेशिक काल में हुआ, वह आघात कैसा था और क्यों था? 2 फरवरी, 1835 को मैकाले ने ब्रिटिश संसद में एक बात रखी। "I travelled length and breadth of India. I could not see a single beggar, a single thief.मैंने पूरे भारत का भ्रमण किया, मैंने एक भी भिखारी और एक भी चोर नहीं पाया। Such a wealth, such a moral value and such a high calibre!क्या भारत का यह नैतिक मूल्य है, क्या भारत के पास धन है, क्या भारत के पास वह कार्य करने की क्षमता है!" उसने कहा कि अगर ऐसा ही रहा, तो हम भारत को कभी जीत नहीं सकते हैं। फिर, उस ब्रिटिश संसद के सामने मैकाले ने कहा - यदि भारत पर आधिपत्य स्थापित करना है, तो we have to attack the very bedrock of India. उसकी कमर पर चोट करनी पड़ेगी। What is that bedrock? उसने यह identify किया, चिन्हित किया। भारत की जो बुनियाद है, that is cultural and civilizational heritage of India.भारत की जो सभ्यतायी, सांस्कृतिक विरासत है, जो उसकी ताकत है, उस पर अटैक करना पड़ेगा, उस पर आक्रमण करना पड़ेगा। फिर, उसने एक रास्ता दिखाया। मैकाले ने उसी ब्रिटिश संसद में बोलते हुए कहा - "इसका एकमात्र रास्ता यह है कि हम भारत की old and ancient शिक्षा पद्धति को, भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति को अपनी शिक्षा पद्धति से विस्थापित कर दें।" उसका परिणाम क्या होगा, उसने सदन को बताया- "उसके कारण भारत के लोगों में एक हीन भावना की एक हीन ग्रन्थि विकसित होगी और जो भी foreigners हैं, जो भी इंग्लिश हैं, वे उसे good and greater समझेंगे, उसे अच्छा और महान

समझेंगे।" ऐसा कहते हुए उसने भारत में शिक्षा पद्धति लाने का जो प्रस्ताव दिया, उसे अंग्रेज़ों ने स्वीकार कर लिया।

उपसभापति महोदय, उसका परिणाम क्या हुआ, मैं उस पर बहुत प्रकाश नहीं डालूँगा, क्योंकि हर हिन्दुस्तानी उसके परिणाम को जानता है। महात्मा गाँधी ने लंदन में सन् 1931 में दिए गए अपने लेक्चर में कहा था - "आपने एक सुंदर वृक्ष को काट दिया है।" वे भारत की उसी शिक्षा पद्धति की ओर इंगित कर रहे थे। उसी वर्ष बंगाल के महान दार्शनिक प्रोफेसर के.सी. भट्टाचार्य ने 'आशुतोष मेमोरियल लेक्चर' में कहा - "राजनीतिक दासता से मुक्ति का तो आंदोलन चल रहा है, लेकिन विचारों की जो दासता है, उससे मुक्ति का आंदोलन चलना चाहिए। राजनीतिक दासता को समाप्त करना, राजनीतिक दासता की अनुभूति करना, राजनीतिक दासता को देख लेना आसान होता है, लेकिन वैचारिक दासता को, संस्कृति की दासता को देखना, उसकी अनुभूति करना, उससे मुक्ति पाना कठिन होता है।" ये दोनों ही संवाद 1931 के हैं। इस दासता का प्रभाव कितना है, उसका मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ।

उपसभापति महोदय, आप जिस क्षेत्र से आते हैं, जिस विद्वता के साथ आपने काम किया है, यह हम सभी जानते हैं। आप जानते हैं कि भारत में एक नालंदा विश्वविद्यालय था। भारत में तक्षशिला और विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी थे। नालंदा विश्वविद्यालय में एक नौ-मंजिला पुस्तकालय था, जिसमें लगभग एक करोड़ पुस्तकें थीं। The Great Library of Alexandria में जितनी पुस्तकें थीं, उतने ही हमारे पास manuscripts थे। सभी विद्वानों का यह मानना है कि Alexandria के पुस्तकालय में दो से सात लाख पुस्तकें थीं और हमारे पास उस वक्त नालंदा विश्वविद्यालय में 10 लाख manuscripts थे। वहाँ 10,000 लोगों में से 8,000 छात्र थे और 2,000 शिक्षक थे। ये वे लोग थे, जो एक चींटी को भी मारना गुनाह मानते थे। शिक्षा का वह केन्द्र, जहाँ तिब्बत, चीन और अरब के देशों से छात्र तथा शोधार्थी आते थे, उसमें बख्तियार खिलजी ने आग लगा दी। दुनिया के इतिहास में ज्ञान पर यह सबसे बड़ा हमला था। 8,000 छात्र और 2,000 शिक्षक मार दिए गए। खिलजी की सेना ने पूछा कि इन पुस्तकों में क्या है, लेकिन वहाँ बताने वाला कोई नहीं बचा था। वहाँ तीन महीने तक आग लगी रही। इसमें महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि वहाँ आग लगा दी गई और वहाँ तीन महीने तक आग जली। यह तो एक घटना मात्र है। Alexandria की लाइब्रेरी का पतन आग लगने से हुआ, लेकिन वहाँ आग लगाई नहीं गई थी, बल्कि वहाँ आग पहुँच गई थी। Caesar भी चाहता था कि Alexandria की लाइब्रेरी का पतन हो।

वे सब लोग, जो मानवीय चेतना से डरते हैं, जो मानव के संकल्प से डरते हैं, वे ज्ञान के विरोधी हैं, क्योंकि ज्ञान मानव में चेतना का विकास करता है, ज्ञान से मानव में संकल्प आता है। इसी ज्ञान की चेतना के कारण दण्डी नामक साधु, जो गंगा किनारे अर्धनग्न बैठे हुए थे, उन्होंने विश्व-विजेता सिकंदर को यह चुनौती दे दी थी कि मैं तुम्हें राजा नहीं मानता हूँ। यह वही ज्ञान की चेतना है, जो अर्धनग्न गाँधी को प्राप्त थी और जब वे आधे वस्त्र पहनकर ब्रिटेन गए, तब उन्होंने कहा कि मैं इसी वेशभूषा में राजा या रानी से मिलूँगा। गाँधी से पहले एक गंगाधर शास्त्री हुए, जो बनारस के एक विद्वान साधक थे। उनको लॉर्ड कर्ज़न ने बुलाया। जब उनकी वेशभूषा देखने के लिए

उनकेपासअधिकारी आए, तो उन्होंने कहा कि यदि कर्ज़न को मुझसे मिलना है, तो मैं उसके पास इसी वेशभूषा में जाऊँगा। मैं भारतीय हूं और भारतीय ही बनकर जाऊंगा, कर्ज़न को मिलना है तो कर्ज़न किसी भी वेश-भूषा में मिले, उसके लिए मेरी कोई शर्त नहीं है। मेरी शर्त यही है कि मैं भारतीय बनकर जाऊंगा। यह भारत है, यह ज्ञान केंद्रित सभ्यता है। जिस नालंदा विश्वविद्यालय की 1 करोड़ पुस्तकें, 10,000 manuscripts, 8,000 विद्यार्थी, 2,000 शिक्षक मार दिए गए, जिस विश्वविद्यालय में पूरी दुनिया के लोग आते थे, उस विश्वविद्यालय को जला दिया गया। हममें से कोई भी नालंदा विश्वविद्यालय को गूगल में सर्च करेगा तो 71,65,000 सर्च मिलेंगे।Alexandriaविश्वविद्यालय, जिसमें सिर्फ 7 लाख पुस्तकें थीं, उसमें किसी की हत्या नहीं हुई - आप The Great Library of Alexandria सर्च करेंगे, तो 10,60,00,000 सर्च मिलेंगे और Alexandria Library सर्च करेंगे, तो 3,40,00,000 सर्च मिलेंगे। 14 करोड़ सर्च उस पुस्तकालय के लिए होते हैं, जिसका decline हुआ, हमें 14 करोड़ सर्च से समस्या नहीं है। यह यूरोप की सभ्यता और विचारों का दुनिया पर किस प्रकार से आधिपत्य है कि दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी के बारे में जानने की किसी को उत्कंठा नहीं है?

उपसभापति महोदय, मैं गलत हो सकता हूं, यदि मैं गलत हूं तो मुझे कोई ठीक करे और यह भी हो सकता है कि मैं गलत ही हूं। मैंने नालंदा विश्वविद्यालय के decline पर एक पुस्तक ढूंढ़ी, मुझे Gokhale Institute की Digital Library में एकमात्र पुस्तक मिली, वह पुस्तक Hasmukh D Sankaliaकी वर्ष 1934 में लिखी हुई कुछ पृष्ठों की किताब है।

[THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH) *in the Chair*.]

मैंने Alexandria विश्वविद्यालय की decline पर पुस्तकों को ढूंढ़ना शुरू किया, तो कोई ऐसा वर्ष नहीं है - आप 19वीं शताब्दी को छोड़ दीजिए, 20वीं शताब्दी को छोड़ दीजिए, 21वीं शताब्दी में भी इतने सालों के बाद भी कोई ऐसा वर्ष नहीं है - वर्ष 1990 में, वर्ष 1996 में, वर्ष 2007 में, वर्ष 2008 में, वर्ष 2011 में, वर्ष 2013 में, वर्ष 2018 में और वर्ष 2020 में Alexandria विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी पर किताबें आयीं। ये दो घटनाएं किस बात को इंगित करती हैं! ये इस बात को इंगित करती हैं कि यूरोप का आधिपत्य इतना है कि यूरोप जो सोचता है, यूरोप में जो घटना घटती है, यूरोप जो समझता है, वही दुनिया की विचारधारा है। आप जो सोचते हैं, आपके यहां जो घटना घटती है, आपके यहां जो दर्शन है, चाहे उसका magnitude कितना ही बड़ा हो, चाहे उसकी intensity कितनी ही अधिक हो, वह दुनिया की विचारधारा नहीं है। इस घटना के द्वारा मैं यह प्रमाणित करना चाहता हूं कि कैसे यूरोप केंद्रित विचारधारा भारत पर हावी है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, स्वतंत्रता का वह संग्राम चला तो हमने राजनीतिक विरोध किया, हमने आर्थिक शोषण के खिलाफ आवाज़ उठायी। दादाभाई नौरोजी ने वर्ष 1901 में 'Poverty and Un-British Rule in India' लिखी और कहा कि ब्रिटेन 500 million pounds ले जा चुका है, लेकिन दादाभाई नौरोजी से पहले भी, 30 जुलाई 1841 से लेकर 7 नवम्बर, 1841 तक Bombay Gazette में भास्कर पांडुरंग नाम के एक स्कॉलर ने 8 'Letters to the Editor' लिखे, संपादक के नाम लिखे गए 8

पत्रों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को इतना प्रतीकात्मक बना दिया। उन 8 पत्रों में उन्होंने विश्लेषण किया कि किस प्रकार से ब्रिटेन ने कपड़ा उद्योग, धातु उद्योग एवं सभी उद्योगों में भारत को लूटा। उत्सा पटनायक जो जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से जुड़ी हुई हैं, उन्होंने लिखा कि ब्रिटेन भारत से 49 ट्रिलियन डॉलर ले जा चुका है, यानी हमारी अर्थव्यवस्था पर ब्रिटेन के प्रभाव, हमारी राजनीतिक व्यवस्था पर ब्रिटेन के प्रभाव का हमने मूल्यांकन किया और विरोध किया, लेकिन जब हमारी संस्कृति पर और शिक्षा पर प्रभाव हो रहा था, तो दार्शनिक भाव में उसका विरोध होता रहा। वहां भी सीमित रूप से उसका विरोध होता रहा। मैंने महात्मा गांधी का उल्लेख किया, जिन्होंने भारत की शिक्षा व्यवस्था पर हुए आक्रमण पर ब्रिटेन में जाकर कहा कि You are attacking on a beautiful tree; you have cut down a beautiful tree.हमने K. C. Bhattacharya की बात की, जिन्होंने "Swaraj in Ideas"की बात कही, लेकिन जब संस्कृति पर आक्रमण होता रहा, तो हम उस आक्रमण को सहते रहे। यही कारण है कि आज़ादी के बाद आज हमारी वैचारिक प्रक्रिया, हमारी विचारधारा, हमारे सोचने का तरीका, हमारी कल्पना सभी यूरोप केन्द्रित है। आज decolonisation of imaginationकी आवश्यकता है,अपनी कल्पनाओं को decolonizeकरने की जरूरत है - हम क्या कल्पना करते हैं, हम कैसे बढ़ना चाहते हैं। यदि यह रोल मॉडल अमरीका और यूरोप बना रहेगा - किसी सभ्यता से कोई संघर्ष नहीं होता है। भर्तृहरि पांचवीं शताब्दी के विद्वान थे। भर्तृहरि ने पांचवीं शताब्दी में यह कहा कि ज्ञान की वृद्धि दूसरी संस्कृतियों, सभ्यताओं और विचारधारों के निरंतर संवाद से होती है। उन्होंने अंत में एक शर्त रखी। जो लोग दूसरों से संवाद करते हैं, क्या वे अपनी परंपराओं को जानते हैं! संवाद करने का नैतिक अधिकार, संवाद करने की क्षमताऔर संवादका परिणाम उसी के पास होता है, जो व्यक्ति अपनी परंपराओं को जानता है, जो व्यक्ति अपनी संस्कृति को जानता है। भर्तृहरि के बाद यशोविजय ने 'ज्ञान सार' नाम की पुस्तक लिखी, "Essence of Knowledge". उसमें ऐसी 32 विशेषताएं बताई गई हैं, जो एक विद्वान और बुद्धिजीवी में होनी चाहिए। उस विद्वान बुद्धिजीवी की 32 विशेषताओं में संवाद की शैली को बताने की कोशिश की गई है। मैं एक विद्वान शांतिदेव को उद्धृत करना चाहता हूं। मैं इन तीनों को इसलिए उद्धृत करना चाहता हूं कि जब हम decolonisationकी बात करते हैं, जब हम भारत की ज्ञान परंपरा की बात करते हैं, तो हम किसी के विरुद्ध नहीं हैं, किसी को हटाना नहीं चाहते हैं, हम किसी को excludeनहीं करना चाहते हैं, हम सब समावेशी होना चाहते हैं। शांतिदेव, Buddhist scholar थे और उन्होंने एक पुस्तक लिखी, शताब्दियों से उस पुस्तक की महत्ता है। उन्होंने यह कहा कि मैं जो कुछ भी लिख रहा हूं, अपनी संतुष्टि के लिए लिख रहा हूं। मैं कुछ नया नहीं लिख रहा हूं। मैं वही लिख रहा हूं जो आप जानते हैं, जो आप समझते हैं, मैं स्वान्तः सुखाय के लिए पुस्तक लिख रहा हूं। भारत की ज्ञान परंपरा में दो महत्वपूर्ण पक्ष हैं। भारत का कोई भी दार्शनिक ब्रह्मांड से नीचे बात नहीं करता है। यदि वह भूगोल की बात करेगा, तो पृथ्वी की बात करेगा; चेतना की बात करेगा, तो ब्रह्मांड की बात करेगा। दुनिया की सारी सभ्यताएं मानवीय चेतना पर टिकी रहीं, दुनिया की सारी सभ्यताएं, सभ्यताओं के भूगोल पर टिकी रहीं, लेकिन हमारी सभ्यता वैदिक काल से लेकर आज तक है। हमने पृथ्वी को अपना भूगोल माना और ब्रह्मांड को अपनी चेतना का कारण और परिणाम दोनों माना। इसलिए कहा जाता है कि हममें ब्रह्म है और ब्रह्म में मैं हूं। हमने

अपने आपको ब्रह्मांड से अलग नहीं किया। उस सभ्यता और संस्कृति में ज्ञान पर ऐसा हमला किया। उस हमले के दो परिणामों की ओर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, E.B. Havell, the Principal of the Calcutta School of Art, उन्होंने रबीन्द्रनाथ ठाकुर के साथ काम किया था। Havell ने कहा कि "Anglo-Indian education has only one objective and that objective is, transplanting the intellectual impressions of Oxford and Cambridge."एंग्लो इंडियन की शिक्षा-व्यवस्था का एकमात्र उद्देश्य यह है कि ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज में जो विमर्श चलता है, जो उनकी सोच है, उनकी दृष्टि है, उसी को छाप देना, भारतीयों को उसकी कार्बन कॉपी बना देना।उसके अनुकूल सोचना, उसके अनुकूल व्यवहार करना और उसी ओर अपना आदर्श मानना। जब मैं बार-बार विदेशियों को उद्धृत करता हूं, तो मुझे लाला लाजपत राय की 'दुखी भारत', 'Unhappy India'ध्यान में आती है। आपको ध्यान होगा कि 1927 में Catherine Mayo ने भारत की आलोचना करते हुए, यहां की महिलाओं की अवस्था, यहां के दलितों की अवस्था, यहां जाति व्यवस्था के परिणामों का जिक्र करते हुए, सुविधाओं की अभावग्रस्तता का उल्लेख करते हुए 'मदर इंडिया' में - पुस्तक के नाम से तो लगता है कि जैसे बहुत अच्छी पुस्तक हो - भारत की ऐसी आलोचना की, भारत की ऐसी तस्वीर प्रस्तुत की, जिस पर गांधी जी ने कहा था "This is report of drain inspector."यह drain inspector की रिपोर्ट है, "I don't read this book." एक तरफ गांधी जी ने किताब को खारिज किया, तो दूसरी तरफ लाला लाजपत राय ने उसी किताब का प्रतिवाद करने के लिए 'Unhappy India', 'दुखी भारत' नाम की पुस्तक लिखी। उस पुस्तक में उन्होंने जो लिखा - आज जब मैंने Havellको quote किया, आज जब मैंने Macaulayको quote किया, अपनी दुर्व्यवस्था के लिए भी और दुर्व्यवस्था से निकलने के लिए भी जब विदेशियों को quote किया - इस पर जब उन्होंने भी ऐसे लोगों को उद्धृत किया, तो उन्होंने लिखा "Nothing is more humiliating than have the necessity to quote foreigners in defence." इससे बड़ी कोई दुर्भाग्यपूर्ण बात नहीं हो सकती है कि हम विदेशियों को उद्धृत करते हैं। "This process itself shows the inferiority complex."यह प्रक्रिया स्वयं में दिखाती है कि हम inferiority complex से ग्रस्त हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, विमर्श की प्रक्रिया को आगे ले जाने के लिए चाहे विदेशियों को उद्धृत करना पड़े, चाहे स्वदेशी चिंतकों को उद्धृत करना पड़े, हम विमर्श की प्रक्रिया को उस अंजाम तक ले जाना चाहते हैं, इस सदन को इसे उस अंजाम तक ले जाना चाहिए, जिससे भारत एक सभ्यता के रूप में जो ज्ञान की परंपरा है... 'न्याय मीमांसा' - मिथिला के एक गांव में 'न्याय मीमांसा' आरंभ हुई और 'न्याय मीमांसा' पर जिस व्यक्ति ने पुस्तक लिखी, मिथिला के उस गांव का नाम सरिसबपाही है, शायद मनोज झा जी उसी के आस-पास से आते हैं, उस गांव के नाम का उल्लेख उस पुस्तक में नहीं है। 'न्याय मीमांसा' जो इतना महत्वपूर्ण दार्शनिक हस्तक्षेप रहा, पूरी सभ्यता में 'न्याय मीमांसा' का हस्तक्षेप रहा और उसका उल्लेख तक नहीं है! नवद्वीप, नादिया - बंगाल से जो मेरे मित्र आते हैं, उन्हें पता होगा - उसे 'Oxford of India'कहा जाता है। क्या Oxford नादिया का मुकाबला करता! उस नवद्वीप का मुकाबला करने की ताकत एक नहीं, बल्कि 100 Oxford में भी नहीं थी। दबाव, आधिपत्य और जिस Tolstoyकी पुस्तक का अनुवाद करते हुए - अब हम क्या करें, जब इस पुस्तक

का अनुवाद काका कालेलकर ने किया, तो उस प्रस्तावना में लिखा और जिस शब्द का प्रयोग किया - प्रतिष्ठित अकर्मण्य। दो तरह के अकर्मण्य होते हैं - एक तो वे, जो स्वभाव से अकर्मण्य होते हैं और एक ऐसे होते हैं, जो प्रतिष्ठित होते हैं, लेकिन अकर्मण्य होते हैं। हमबुद्धिजीवी जो दशकों से, शताब्दियों से प्रतिष्ठित अकर्मण्य बनकर रहे, Oxford को कहना चाहिए था 'Nadia of Britain'. Shakespeare को कहना चाहिए था 'Kalidas of Britain'. उसकी जगह कालिदास को कहा जाता है 'Shakespeare of India'. गगनेन्द्रनाथ ठाकुर - सरकार साहब, अगर नाम में कुछ गलती हो जाए, तो बता दीजिएगा -रबिन्द्रनाथ टैगोर के परिवार से आते थे, उन्होंने Macaulay की पूरी परियोजना को एक कार्टून से दिखा दिया। उस कार्टून का नाम था - विद्या कारखाना। हमारे दक्षिण के मित्र लुंगी की तरह धोती पहनकर आए, बिहार और उत्तर प्रदेश के लोग धोती पहन कर आए, कोई पजामा पहनकर आए, उस कारखाने में गए और उधर से पैंट, कोट, टाई पहनकर निकले। उस 'विद्या कारखाने' ने ही बता दिया कि Macaulay ने इस देश के विद्या के स्रोत पर, उस देश में जहां ज्ञान की परिभाषा अलग है।

3.00 P.M.

जब मैं decolonization की बात कर रहा हूं, तो मैं पहले ज्ञान की परिभाषा स्पष्ट कर दूं कि पश्चिम ज्ञान को किस रूप में देखता है और भारत ज्ञान को किस रूप में देखता है। पश्चिम में, 'knowledge is power'. Knowledge को wealth की तरह ताकत माना गया है। Knowledge से career बनता है, knowledge से आधिपत्य रहता है। इसीलिए knowledge के खिलाफ अभियान चलता रहा। मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने यहां जलाया, सीज़र ने अलेक्ज़ेंड्रिया में, जो उसके पतन का कारण बना, लेकिन हमारे यहां नॉलेज को कहा जाता है purifier. It's not power, it's purifier. यह भर्तृहरि ने कहा कि inner self में knowledge आता है, तो हम भारत में ज्ञान को आंख से नहीं, मुंह से नहीं, कान से नहीं, मस्तिष्क से देते हैं। This is 'eyes of mind'. ज्ञान का उद्देश्य होता है कि मस्तिष्क में चक्षु का विकास करना, आंखों को विकसित कर देना। जब हम आंख बंद करके, मुंह बंद करके, कान बंद करके पूरी दुनिया को देख लेते हैं, वह ज्ञान होता है, जिसको शिव ने पार्वती से कहा - '112 types of meditation'; तो ज्ञान के ये दो प्रकार जो पश्चिम और पूरब के हैं, उसे हम भारतीयों को समझना पड़ेगा।

आगे मैं दूसरी बात का जिक्र करना चाहता हूं। भारत की परम्पराओं में जब न्याय दर्शन और नव न्याय विकसित हुआ, हम सब जानते हैं कि ज़ीरो के आविष्कार से लेकर infinite तक, जब रामानुजन पर फिल्म बनी, तब हमें पता चला कि, "The Man who knew Infinity". उसके पहले हमें ज्ञान नहीं था। मुनि कश्यप, चार्वाक और सुश्रुत ने मेडिसिन के क्षेत्र में, चिकित्सा के क्षेत्र में, जो उन्होंने दिया, उसे पूरी दुनिया ले गई, लेकिन मैं जिस बात को रेखांकित करना चाहता हूं, वह भारत की नई पीढ़ी -- जो gamingमें लगी हुई है, जो अन्य प्रकार से अपने आपको उलझाये हुए है -- को जानना और समझना चाहिए।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हम सब ने "पंचतंत्र" का नाम सुना होगा। यह "पंचतंत्र" क्या है, विष्णु शर्मा के द्वारा लिखा गया पंचतंत्र है, लेकिन इसकी जो महत्वपूर्ण बात है, वह यह है कि 50 भाषाओं में 200 प्रकार के पंचतंत्र प्रकाशित हो चुके हैं। भारत की तीन-चौथाई भाषाएं बाहर की हैं। इस सदी में, 570 में, उपसभाध्यक्ष महोदय, बहुत दशकों के बाद, सदियों के बाद हमने AD और BC लिखना बंद किया है। Before Christ; After Death लिखना बंद किया। अब contemporary era लिखते हैं। 'Before Contemporary Era' लिखते हैं, आगे जाकर यह भी बदलने की जरूरत है कि 'Contemporary Era' कहां से शुरू होगा - जहां से तुम शुरू होते हो या जहां से दुनिया की वैज्ञानिकता शुरू होती है! हमारा आपसे संघर्ष नहीं है, इस पर हम संवाद करेंगे, लेकिन अभी आने वाले समय में, जब सभ्यता का संवाद शुरू होगा, तो यूरोप को हम दस्तक देंगे कि केलेंडर भी जो है, वह वैज्ञानिकता किसमें है? नक्षत्रों में है, हमारे पंचांगों में है। मैं दरभंगा गया था और एक व्यक्ति को मैंने पंचांग बनाते हुए देखा। उसको आप रीजन से जोड़ते हैं! जैसे दर्शन के बारे में कहा गया है, "Indian philosophy has long been persecuted as a religious activity." भारत के दर्शन को एक साम्प्रदायिक प्रक्रिया बताकर उसे exclude करदिया गया, दुनिया के दर्शन में। उसे पढ़ते भी थे, उसको imitate भी करते थे, लेकिन अब अपने शब्दों में व्यक्त करके हमारे सामने प्रस्तुत करते थे। इसलिए cultureof mathematics भी challenge में है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, जब हम vedic mathematics की बात करते हैं, तो ऐसा लगता है कि हम सिर्फ वेद की बात कर रहे हैं। Mathematics अपने आप में प्योर नहीं होता है। सी.के.राजूनाम के व्यक्ति ने इस पर बहुत काम किया है। अनेक लोग काम कर रहे हैं। Mathematics एक कल्चर से पैदा होता है और mathematics की वे धाराएं होती हैं। उसमें 90 प्रतिशत तो वही होता है, लेकिन 10 प्रतिशत स्थानीयता से प्रभावित होता है। Calculus हमें पहले मालूम था, Newton से पहले भारत में calculus मालूम थातो geometry हो, arithmetic हो या algebra हो, वह भारत में पहले से विद्यमान था, तो क्या यह सिर्फ जनरल नॉलेज की बात हो जाएगी? क्या सुश्रुत का नाम, बिहार के दानापुर, जिसका नाम खगोल था...खगोल नाम क्यों पड़ा, परगना नाम क्यों पड़ा? 2009 में जब नासा ने कहा कि खगोल में जाकर, परगना गांव में जाकर पूर्ण रूप से सोलर एक्लिप्स को देखा जाता है, तब हमने देखा कि खगोल आर्यभट्ट की नगरी है, जहां आर्यभट्ट का आज भी जन्मदिन मनाया जाता है। मिथिला के जिस गांव का मैंने जिक्र किया, वहां न्याय दर्शन की परम्परा आज भी लोग जीवित रखे हुए हैं।

असम का Mayong गांव, तासा साहब Mayong गांव ही है न? Mayong गांव में आज भी तंत्र विद्या है। तंत्र विद्या को हमने भूत, प्रेत, पिशाच से जोड़ रखा है, लेकिन ऐसा नहीं है। तंत्र एक साइंटिफिक सिस्टम होता था। जब किसी चीज़ का decline होता है, जैसे ज्योतिष विद्या का decline हुआ तो किसी की गिरावट से हम उसका मूल्यांकन नहीं करते हैं, उसके अच्छे दिनों में, उसके अच्छे परिणामों से उसका मूल्यांकन करते हैं। लेकिन उस गांव को हम भूल गये हैं, वह सिर्फ विदेशी पर्यटकों का ही अध्ययन का केन्द्र रह गया है, ऐसा नहीं हो सकता है।

दूसरी महत्वपूर्ण बातयह है कि 19वीं शताब्दी में और 20वीं शताब्दी में हमारे पास साधन और संसाधन का अभाव था, तब राजेन्द्रलाल मित्र, नवगोपाल मित्र, राजनारायण बसु, बी.सी. पाल,

आर.के. गोपाल भांडारकर, जी. वेंकैया, बाद में दयानंद सरस्वती, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, महर्षि अरविंदघोष, विवेकानंद - एक बड़ी श्रेणी चली, जो भारत की संस्कृति को, कला को, साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्न करती रही। उस समय न हमारा राज था, न हमारा शासन था, न हमारे पास संसाधन था, इसे ही पीढ़ियों की इच्छा-शक्ति कहते हैं। यदि सभ्यता को बनाने की इच्छा-शक्ति होती है तो तिलक पैदा होता है, लाजपत राय पैदा होता है, दयानंद सरस्वती पैदा होता है, आर.के. भांडारकर पैदा होता है। जो लोग बिहार से, बंगाल से आते हैं, वे के.पी. जायसवाल को जानते हैं। मैं के.पी. जायसवाल का नाम इसलिए उल्लिखित करना चाहता हूं कि के.पी. जायसवाल ने 1915 में बिहार एंड ओडिसा रिसर्च सोसाइटी की स्थापना की। उसके दो साल बाद आर.के. गोपाल भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च सोसाइटी की स्थापना पुणे में हुई। ज्ञान की जो यह परम्परा है, वह अखिल भारतीय है, वह किसी एक सीमा तक सिमटी हुई नहीं है। मैंने जिन के.पी. जायसवाल का नाम लिया, वे पेशे से वकील थे। ज्ञान की भारत में विधा क्या है, उन्हें संस्कृत किसने पढ़ाई, किसी ने डिप्लोमा नहीं दिया, किसी ने डिग्री नहीं दी। एक बाबा जो उनके घर पर आता था, उसे बाल्टी बाबा कहते थे, उन्होंने उन्हें संस्कृत सिखाई, संस्कृत पढ़ाई। वे Oxford से लौटकर आये और 1913 में उन्होंने पहला लेख लिखा, 'Introduction to Hindu Polity' जो रामानंद चटर्जी निकालते थे, in Modern Review, Modern Review को हम सब जानते हैं कि Modern Review ने दुनिया में भारत की संस्कृति को, भारत की स्वतंत्रता, स्वाधीनता के आन्दोलन को किस मौलिकता के रूप में रखा। हिन्दू पोलिटी का आज मैं इसलिए उल्लेख करता हूं कि आजादी के बाद पहली बार, मैं यह नहीं मानता हूं कि बाकी लोग नहीं मानते थे, लेकिन पहली बार भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सदन और सदन के बाहर डंके की चोट पर कहा कि India is the oldest form of democracy. भारत लोकतंत्र का प्राचीनतम घर है। समाज शास्त्र की किताब में कहीं एक पंक्ति आती थी, उसमें सिर्फ मगध, वैशाली और लिच्छवी के गणतंत्र का उल्लेख होता था। मैं उस उल्लेख से बाहर जाना चाहता हूं ...**(व्यवधान)**...उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सिर्फ पांच मिनट में खत्म करता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): You can reply after everybody speaks. ...*(Interruptions)*... He has time to reply afterwards.

श्री राकेश सिन्हा: लोकतंत्र के बारे में जो के.पी. जायसवाल जी ने कहा ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Please conclude in two minutes. You can speak afterwards.

श्री राकेश सिन्हा: उन्होंने उस पुस्तक में जो बात लिखी है, वह पुस्तक 1924 में छपी। 1924 में वह किताब छपी और उसमें केवल उस व्यक्ति ने जो काम किया, जो शोध किया, उसे work philosophy is the passion कहते हैं, उसमें उन्होंने तीन बातों का जो उल्लेख किया, मैं उसको कहना चाहता हूं।

भारत में सभा, समिति और वैदिक युग में हम सब जानते हैं कि जो गणतंत्र था, उस गणतंत्र के प्रकार क्या थे। हमारे यहां ऐसा भी गणतंत्र था, जिसमें राजा नहीं था।हमारे पास अवंतिका का ऐसा गणतंत्र था, जिसमें एक नहीं, दो राजा होते थे। हमारे यहाँ ऐसा गणतंत्र था, जिसमें Council of Ministers rule करती थी। हमारे यहाँ ऐसा गणतंत्र था, जिसमें युवराज और राजा के बीच में निर्णय होता था कि किसका निर्णय कितना महत्वपूर्ण है। मैं इसकी एक घटना का ज़िक्र करके अपनी बात को समाप्त करूँगा। अशोक ने एक बार निर्णय लिया। अशोक के निर्णय को जब कैबिनेट में discuss किया गया, ...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Please move the Resolution.

श्री राकेश सिन्हा : तो उसने युवराज को बताया। युवराज ने कहा कि यह राज्य के हित में नहीं है, इसलिए राज्य की treasury से पैसा नहीं जाएगा। जब अशोक को कहा गया कि आप इस पर पुनर्विचार कीजिए, तो अशोक ने कहा था, 'I am sovereign of a half apple.' यानी "मैं आधे सेब का ही मालिक हूँ, आधे क्षेत्र का ही मालिक हूँ।" यह जो गणतंत्र है, यह जो राजतंत्र है, राजतंत्र की जो अपनी परिभाषाएँ थीं, आज दुनिया के सामने, चाहे Oxford हो या Cambridge हो या Harvard हो, वहाँ भारत के इस विमर्श को आगे ले जाना पड़ेगा।

उपसभाध्यक्ष महोदय, अंत में, मैं एक बात कहना चाहता हूँ। पूरे देश में ज्ञान के प्रति जो आकर्षण था, ज्ञान के प्रति उस आकर्षण की एक घटना का ज़िक्र हमें सुनना चाहिए। केरल में गोकर्ण से लेकर कन्याकुमारी तक 64 गाँव बसाए गए थे। वे गाँव उन scholars के थे, जो कई कारणों से विभिन्न भागों से केरल पहुँचे थे। कहीं persecution हो रहा था, कहीं सुविधाएँ नहीं मिल रही थीं। गोकर्ण से लेकर कन्याकुमारी तक 64 गाँवों को बसाया गया था। जिसे साउथ का नालंदा कहा जाता है, कान्थाल्लूर शाला, उसमें 64 branches थीं। चार्वाक वहीं से अध्ययन करके आए। अध्ययन की जो परंपरा है और अध्ययन को आगे बढ़ाने की जो परंपरा है, मैं उसके दो-तीन नाम ले रहा हूँ। यदि चौखम्बा प्रकाशन काशी से ऐसी पुस्तकों को प्रकाशित करता था, जो नई पीढ़ी को भारत की संस्कृति का ज्ञान कराए, तो दूसरी तरफ D.A.V. College का Research Department लाहौर से किताबें प्रकाशित करता था, पुणे से एक आश्रम के द्वारा पुस्तकें प्रकाशित की जाती थीं। इस तरह से पश्चिम हो, पूरब हो, उत्तर हो, दक्षिण हो, ज्ञान के प्रति वही ललक थी।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Sinha *ji*, you have moved the Resolution. Now any Member desiring to speak and the concerned Minister may also do so...*(Interruptions)*... You can definitely speak afterwards.

SHRI RAKESH SINHA: Sir, I am just concluding. I am concluding in two minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): A lot of speakers are there.

SHRI RAKESH SINHA: Sir, just give me one minute.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): You finish it in one minute. Then I will call the next speaker.

श्री राकेश सिन्हा : यह जो उपनिवेशवादी ताकत और प्रवृत्ति से हम नहीं निकल पाए, इस घटना से हम सब समझ सकते हैं। आजादी के बाद मोहन लक्ष्मण रानाडे गोवा मुक्ति संग्राम में थे और जेल गए। 1962 में हमने गोवा के 4,000 सैनिकों को भारत से छोड़ दिया। जब मोहन लक्ष्मण रानाडे की मुक्ति की बात आई, तो हमने कोई शर्त नहीं रखी। 22 नवम्बर, 1966 को अटल बिहारी वाजपेयी जी ने; 7 अगस्त, 1969 को लोक सभा में जॉर्ज फर्नांडिस जी ने और 6 अगस्त, 1969 को लोक सभा में सेजवाल साहब ने यह सवाल उठाया कि हमने मोहन लक्ष्मण रानाडे को क्यों नहीं छोड़ा? उपसभाध्यक्ष महोदय, वह घटना कितनी दर्दनाक है, आप सुन लीजिए। मोहन लक्ष्मण रानाडे की माँ, रमाबाई की आंखों की रोशनी जा रही थी। वे उनके इकलौते बेटे थे। उन्होंने भारत सरकार से कहा कि मेरी आंखों की रोशनी जा रही है। रेडक्रॉस सोसाइटी ने उनकी तरफ से एक पत्र बनाकर पुर्तगाल के पास भेजा कि इससे पहले कि उनकी आंखों की रोशनी चली जाए, वे अपने पुत्र को अपनी आंखों से देख लेना चाहती हैं, लेकिन पुर्तगाल ने उनके निवेदन को खारिज कर दिया। हमारी सरकार उनको रिहा नहीं करवा पाई। ये जो घटनाएँ हैं, जिन घटनाओं के कारण आजादी के बाद जब Commonwealth की सदस्यता ली जा रही थी, उस समय CPM के सुन्दरय्याजी से लेकर भारतीय जनसंघ के लोगों ने कहा कि जिस Commonwealth के आप सदस्य बन रहे हैं, उसका head monarch है, जो संशोधन हुआ है, वह संशोधन सिर्फ face saving है, जिस Commonwealth के आप मेम्बर बन रहे हैं, वह देश आपको लूटता रहा है, आपको घसीटता रहा है। यह जो प्रवृत्ति है, इस प्रवृत्ति से निकलने के लिए आज देश को आत्मविश्वास चाहिए, आत्मबल चाहिए। इसी आत्मविश्वास और आत्मबल के सहारे हम अपने ज्ञान की परम्परा को आगे बढ़ाएं, उन चीज़ों को आगे बढ़ाएं, जो पूरी दुनिया के सामने हमारे देश को एक सभ्यतायी राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करें। इसी के साथ, मैं अपने इस संकल्प को सदन के सामने रखता हूं, धन्यवाद।

The question was proposed.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): The Resolution is moved. ...*(Interruptions)*... Dr. AmeeYajnik; not present. Now, Shri Jawhar Sircar.

SHRI JAWHAR SIRCAR (West Bengal): Sir, I thank you for giving me this opportunity. I thank Shri Rakesh Sinha. It was exactly 45 minutes, your usual class time, and we were all enlightened to be your students. He has spoken a lot of good things. I must compliment him. He has covered a lot of Indian history and I fully agree with him that we must all take pride in the achievements of India. We have just a few fine-tuning questions. That's all.

You have mentioned in your Resolution 'ancient India' and at another point, you have mentioned 'Indian knowledge tradition'. These two -- 'ancient India' and 'Indian knowledge tradition' -- are different, because Indian knowledge tradition continues beyond ancient India, through the medieval period and through the modern period. We cannot disown everything in the modern period. We can't send back all cycles to Great Britain or other things like matches or lanterns, just because they had sent them. We can't do that. We can't turn back the wheel of history. They were exploiters. They tried to captivate our minds. There is no doubt about it. They have changed our mindset and we really require a re-adjustment of our mindset. I fully agree with you. But I would raise a few humble points.

Sir, the first one is: Why did we forget all that knowledge? Why did we forget that surgery? Why did we forget how to drive flying machines? That is one thing that the proposed commission, if it is set up, may like to find out. Why did we fall back from the brilliance we had achieved in physics, astronomy and everything, and we are left behind with only Ayurveda, to which most people don't go, and Astrology? Why have we forgotten all this? Why is that we have forgotten that? We would like to ask that. We have to go for introspection to find out.

The second point which I would like to submit is that this forgetting was so devastating that we have forgotten everything. Let me explain. Samrat Ashoka is the pillar of our ancient Indian period. You know it; I know it; everyone knows it. Samrat Ashoka was wiped off from the Indian history. I am repeating that he was wiped off the Indian memory. Not a single textbook mentioned him for centuries after centuries for millennia, until he was rediscovered in 1837 in the Asiatic Society, Kolkata, by a young British scholar, who died the next year, out of overwork. He was James Prinsep. Why did we forget Ashoka? Was it because he was a Buddhist? Was it because he rose against the caste system? I am not getting into * politics; I am not getting into all that. All

* Expunged as ordered by the Chair.

I am asking is: Why is it that such a *mahapaap* happened that Ashoka was completely forgotten and had to be reconstructed and retrofitted into Indian history?

I can go on mentioning. Ajanta, the pride of India, was completely obliterated from our landscape until it was rediscovered in 1819. Why did we have to rediscover it? These are points which we need to ask ourselves. I completely believe in your theory that we had supreme achievements. But in 1837, Sarnath was found out again. Sarnath was not destroyed by Bakhtiyar Khilji. Sarnath was found out by digging. In 1851, the famous Sanchi was rediscovered. I can go on. Bhahrut was rediscovered. The point is, Indian knowledge had an obsessive urge to retain only selective memory, and not to remember much of its other history. That is the first point I am submitting. Selective memory is not bad *per se,* because we don't remember conflicts we had within ancient India. If the history remembers conflicts, it leads to a lot of problems.

So, I have just mentioned these features. I am not blaming, but these are the features. Among the other things, we had even forgotten Indus Valley, Harappan Civilization. Harappan Civilization was found out and gifted to us between 1922 and 1946. The first textbook that mentions Harappan Civilization is of 1954 Calcutta. If you were a student before 1954 -- I have gone through earlier books of Vincent Smith and all those books -- there is no mention of Harappan Civilization. So, we had a great quality of amnesia. All the gains, that we are making now, should not be subject to the same amnesia.

That is my humble submission. If you ever set up a research commission or a committee, look into why we lost out on such brilliant achievements. We all support the glory of India. Anyone, who does not support it, is not an Indian. I am very clear about it.

Let us now come to the next point. When you talk of universities and brilliance of learning, for centuries after centuries, for two and a half millennia, it was centered to one caste. I am sorry to say it, it was centered to one caste. Would you like to go back to one caste? It was not a knowledge that was widespread. It was not knowledge that was disseminated. It was kept and retained as a code knowledge between one caste and one caste and one caste only. Secondly, if the *kshatriyas* had to go through training, they were given private tuitions by their *gurus*. We are not referring to that. What we are referring to is the constriction of knowledge. One, I referred to is amnesia. The second is constriction. With the grace of God, no such constriction is ever possible. So, I hope that we all support free, open and casteless education.

The third point I would like to mention, which may help my good friend Rakesh Sinha*ji*in trying to understand the limitations of why we lost. The pain of losing out to foreign powers hurts us as well. It is not that we are immune to it. We do not express it in such terms. Because of casteism again, we could not touch a person of another caste and go in for treatment, or surgery and other things. It is again because of that thing. You can't open a dead body, it is impure. A *shava* is impure. Therefore, we have to understand that behind this glory lay limitations. No one is questioning the magnificence of Indian glory. We are questioning the limitations and we need to uphold and understand, but in a rational manner. Not in a self-laudatory manner, but in a self-critical manner. Not in a proprietary manner that I alone am bringing out this knowledge. It is a knowledge that has existed and all Indians are proud of it. We have retained certain bits and pieces of it and we must go forward.

I support his Resolution for research commission, but there are certain clauses, like, making it mandatory for universities. As somebody who loves universities, I do not like anything that is mandatory on universities. I do not like the word mandate somehow. Leave it to free thought, free will, free such thing. It is an excellent exposition that he has made. I am not a killjoy. My humble submission is that there were certain inherent flaws that prevented this glorious amount of knowledge from transferring itself to material glory and from material glory to material prosperity that covered the whole of this vast land. With these words, I thank you and I hope these points are taken into account.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Thank you, Sircar*ji*. Now, I call upon Shri T.K.S. Elangovan. ...*(Interruptions)*...

श्रीमती छाया वर्मा (छत्तीसगढ़) : सर, डा. अमी याज्ञिक जी आ गई हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Her turn would come again.

SHRI T.K.S. ELANGOVAN (Tamil Nadu): Hon. Vice-Chairman, Sir, I fully support Mr. Rakesh Sinha's Resolution because India is one of the oldest countries with rich culture. This part, I can compare only with four other areas in the world, namely, Greece, Rome, Egypt and India. Rest of the places were newly added. In fact, even the U.S. is not an old thing. Only two empires were there, one is Greece and the other Rome, where the cultural activities were so impressive that people followed everywhere. Now that they are

not following our culture. They don't adopt themselves to our culture. They don't fight or they don't work to protect our culture. They are taking care of their culture. It is our duty to take care of our culture. The only place where I differ is that what is our culture? That is the question. I can quote one book that recently came which is, 'India Dissents'. 'India Dissents' is the name of the book by Shri Ashok Vajpeyi. Shri Ashok Vajpeyi is a Hindi poet and noted cultural and art administrator. He was also the Chairman of the Lalit Kala Akademi. What he says is that India has different thoughts. There were many scholars who gave different kinds of ideas; all Indians not foreigners. That includes Gautama Buddha. There are many people who had many ideas and which are all Indians not foreigners and not posed by the Britishers during their period. It was all earlier to British. What he says is, India and the Plurality of Dissent: "Bow to him who is the word both occult and manifest, his glory revealed by the power of the independent mind." He had quoted this from a book called, *Subhashitavali*, an anthology of Sanskrit verse compiled by Vallabhadeva. He says that whatever ideas which come up from this land, not from foreign land, should be preserved. That is what I think, our colleague, Shri Rakesh Sinha, was also saying. No British ideas; no ideas of any foreigner. We have our own ideas. We have different ideas. Repeatedly, I have been telling that India was ruled by many kings. There were many kingdoms in India. India was so rich in culture that many people from outside India attempted to enter India and see what is available there. Maybe they have involved in some of the things like pushing their culture on us and thrusting their culture on us. But, in one area where I differ from Shri Rakesh Sinha is that, beyond Vindhyas, that is, South of Vindhyas, there was a different culture. I can boldly say what Thiruvalluvar said was, 'All men are born equal.' That is my culture. I come from an area which is South of Vindhyas. My culture is what Thiruvalluvar said in my language that 'All men are born equal' but here it is not possible. I can quote one example. The way of life of the southernerst is, it is an equanimous society. The southern society is an equanimous society. There is no difference by birth. That is very important. I can quote an example. There were four major kingdoms in the South, that is, the Cholas, the Cheras, the Pandayas and the Pallavas. They were four major kingdoms. In none of the major kingdoms that the Kings had come from the Kshatriya class. The concept of Kshatriya is not there in the South of Vindhyas. That is my culture. When somebody says that Manudharma is your *dharma*, how can I accept it? My *dharma* is not Manudharma. I don't say that Manudharma is wrong. That is for them to keep. Whoever wants to follow Manudharma, they can follow. But, I don't want to

follow Manudharma because in my area, South of Vindhyas, there is no Manudharma in force. The Kings, whoever came as a Chola King or a Chera King, were not Kshatriyas. Today's claim, after this development in the South, every community says that we were also rulers. They were all in the OBC list and in the SC/ST list, which means there is no caste difference. But, it has come into us. What we say is, we have to preserve Indian culture. India is a vast country with huge population. There were many languages because every culture has created a language or every language has a separate culture. Likewise, my language has my culture. I do not want to be put into this Manu dharma concept. Our society is an equanimous society. I agree with Shri Rakesh Sinha that every culture should be protected, preserved and, I think, he will agree with me. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): The next speaker is Dr. Amar Patnaik.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, while I compliment my friend, Rakesh Sinha*ji*, for moving this Resolution, he seems to have been inspired by historical anecdotes and academic assertions. I will lend support to him by giving some theoretical background and support to what he has been saying in his Resolution. So there was the Italian philosopher, Antonio Gramsci. Antonia Gramsci talks about a concept called 'cultural hegemony'. I will read a portion of his book. He says, "Cultural hegemony is the idea that the dominant ideology of society at that time, the beliefs, the explanations, the perceptions, the values and the morals reflects that of the ruling class." Of course, during the time of 200 years of our colonial rule, they were the ruling class and the society reflected their value system not only in societal level, but also in educational level, cultural level, at all levels. He goes into saying that dominant ideology justifies the social, political and economic *status quo* as natural and inevitable, perpetual and beneficial for everyone, rather than as artificial social constructs that benefit only the ruling class; to project as if it is for everybody. And that is the entire genesis of the cultural loss of tradition, the knowledge tradition that he talks about in his Resolution that has taken place in this country and not only in this country, the world over. This is a theoretical concept. Therefore, this is exactly what the Britishers did; cultural hegemony. They tried to capture culturally the Indian society in its various hues and colours. There is no undenying the fact which has been mentioned in the Resolution that there is a need to

undo it, no question about it. No country or people can flourish or be the dominant power ignoring one's own cultural identity. Therefore, if we follow the Resolution and develop our own culture, what we have lost, we could actually recapture and exercise the same cultural hegemony over the rest of the world. And that is why we should all aspire to do what he has suggested in the Resolution. But the problem is, there are areas which the Resolution does not talk about and which, I think, are necessary when we are recapturing our culture and recapturing our knowledge tradition and, that is, No. 1, the cultural intermingling, the confluence, the diversity. While doing all this, we have to recognise the diversity that was existent in the Indian culture and celebrate the same. We cannot bring it to one identity as some of the speakers said. We also have to think about interdisciplinarity. Generally, the British system, the Macaulay system brought in disciplinarity to a subject. You only do research in one particular discipline. What was done during the ancient times in our culture, the Takshashila, the Nalanda, was this interdisciplinarity. A child was studying history, geography, spiritualism, religion, everything before he became a full-fledged researcher or full-fledged academic scholar and that is currently missing. So while we recapture this cultural knowledge tradition, we also have to think about our little traditions.

There are two concepts in sociology, the great traditions and the little traditions. What is very important is to recognise that we have lost these little traditions because they have invariably been orally transmitted. Now, in order to recapture the same, we have to promote ethnographic studies where you have to go and stay with these communities, stay with those people. That has been somehow missing because ethnographic studies require 10 to 15 years of staying with the community. There is a concept called cultural relativism. You cannot interpret somebody's culture unless you stay with them, you cannot know what the culture is. And, therefore, while we establish these research centres, we have to be cognizant of this. Sir, I will take two more minutes. We also have to be very practical about this aspect that a person who spends fifteen or ten years or even five years in a community to study their culture, to study their little traditions, the grassroot innovations that may have taken place, that may have been there, we have to link it to a job. All we have to do is to fund it. The R&D expenditure in India is one of the lowest even in the areas of Science and technology. We have to be practical. We have to be pragmatic about the fact that we have to increase our R&D spending in these particular areas. The States do not have the money. He has suggested that every State and district should have it. The States can't meet it from their

resources. I am sure the Government of India should think in these lines because it is very important. So, we have to also remember, as my predecessor Jawhar Sircar*ji* was talking about, that while doing research and recapturing our history, our traditions, our knowledge traditions, our culture, we have to also banish the pernicious practices and, for example, the most important, the caste system. We cannot recapture something which was definitely responsible for division in the society and which was used by the colonial powers to regain and destroy our culture. To perpetuate in the society, we have to celebrate Raja Ram Mohan Roy; we have to celebrate all those who always spoke against the caste system.

Sir, lastly, we have to set our own house in order. Let me speak a little bit about what is already happening in India. At the Indian level, in the University of Delhi, we have the Department of Modern Indian Languages and Literary Studies which runs a Masters Programme in Comparative Indian Literature but only talks about literature. We have something in the J.N.U., the Centre for South Asian Studies. But, you look at Oxford. Oxford University Centre for Hindu Studies has 22 ongoing projects that have generated passionate discourse between Western and Indian traditions of scholarship. We have to be that. We cannot be sitting in an ivory tower and only trying to recapture history in a limited way and not recapture the world because cultural hegemony should actually take it to recapture the world not just India. Now, let me also talk about the State level. In our State, for example, under the leadership of our Chief Minister, Shri Naveen Patnaik, we have set up a South Odisha Cultural Research Centre at Berhampur University. We have the Jagannath University of Sanskrit. Now, these are the things that have to be done and that have to be done at a global scale. Jagannath Culture, for example, is a cult. No amount of history, no amount of writing is sufficient to describe the full expanse of that particular culture that is there and a lot of research is required; a lot of money, of course, is required. We have to do something about it and be pragmatic about it.

Sir, lastly, there was a proposal. When I say, we have to set our house in order, there was a proposal from Odisha that let us declare Odissi music and confer it classical status. Why did we do it! We did it because Odissi dance was given a classical status; Odia language was given a classical status. But, you are not giving it to Odissi music. Now, we have this piecemeal kind of an approach, when we don't ourselves celebrate our own culture, when we don't celebrate our own proposals which are coming from research at the State level on the plea that there has not been adequate research. Then, who will do that research? So, let us also set our own house in order. All these things

will be necessary to establish our cultural hegemony. And, therefore, I support this proposal wholeheartedly, strongly with this theoreticalsupport that we need to establish this hegemony only by strengthening our cultural roots, our knowledge traditions and our cultural institutions while at the same time, giving up some of the practices that, I think, not going to stand us in good stead.

DR. V. SIVADASAN (Kerala): Respected Vice Chairman, Sir, hon. Member, Dr. Amar Patnaik has already quoted the work of Antonio Gramsci. The life of Antonio Gramsci has clearly showed importance of fight against the cultural hegemony. He had written a series of essays called 'Prison Notebooks' in jail. The Italian fascist rulers had sent him to jail and inside the jail; he had written his 'Prison Notebooks' that we are discussing here. He had clearly mentioned as to how the colonial powers or the imperialist powers are capturing the power and how they are utilising it. The basic character of colonialism is exploitation; wherever, there is colonialism, they will search only for profit. The basic aim of colonialism is profit. Now, we are living in an imperialist world, there is imperialism and there is a highest stage of capitalism. Here, I am speaking in front of a mike; some local-centric spirit has been shared by the proposer of the Resolution, respected Rakesh Sinha*ji*. Here,I am speaking in front of a microphone. This is an innovation of Alexander Graham Bell, a Scottish Scientist. But, we are using this microphone. Another thing, Albert Einstein, a noted scientist, he was born in Germany. His theory on relativity and quantum mechanics are two basic pillars of physics. We are teaching quantum mechanics and relativity theory in our educational institutions. We are studying the life and contributions of Albert Einstein. We do not have any hesitation to receive the contribution of Albert Einstein. His theory, $e = mc^2$ is another important thing. We are utilising this theory wherever our electricity plant is working. Galileo Galilei was an Italian scholar, he told us about solar-centric system. He was not from Kerala, Tamil Nadu or from Northern part of India. We respect Galileo Galilei and also Giordano Bruno, another philosopher and historian. He sacrificed his living blood for truth and scientific spirit. We will address all these things in such a discussion. Here, Mr. Rakesh Sinha noted about K. P. Jayaswal's theory on India, Indian National Education Policy and all other things. I do not know why Mr. Rakesh Sinha is not addressing the basic spirit of colonialism and imperialism. The British colonial powers had studied India because they were interested to exploit Indian resources. Wherever colonialism reach whether it is America or Russia, they tried to exploit the people, they had studied their culture; they had studied their

lifestyle and everything. The aim is only one to exploit the common people. So, I think we should discuss as to what is the Indian concept. Mr. Rakesh Sinha has mentioned lot of things.

But I am interested to read one thing from Manusmriti. The Manusmriti says that people who stay between Ganga and Yamuna are superior to other people. Those who are staying between Ganga and Yamuna, they are superior to other people. Then what is the status of South Indians? Then what is the status of the people far in North East? ...*(Interruptions)*.. Yes, all places. ...*(Interruptions)*.. So, it should be discussed. That is a very dangerous thing if we are promoting Manusmriti or if we are promoting the values of the Manusmriti. It should be rejected in this House. A lot of intellectuals, a lot of social reformers stand against this concept. Bharatiyar was already quoted, and he quoted names of other Tamil poets. He told us, *"This country is common asset of all 30 crore people of the country." *"This is such an incomparable society."At that time only30 crore people were in India. That is why Bharatiyar said, *"It is truly modern to the world." That is why we are saying that. So, we are searching for common property, we are searching for common good. Martin Luther King was not from India. Martin Luther King was from America. He said, "I have a dream that one day my four little children will live in a nation; there they will not be judged by the colour of their skin, they will be judged by the content of the character." These are the words of Martin Luther King. How will we reject these kinds of words? So, I like Martin Luther King, I like Bharatiyar, I like the words of philosophers like Jawaharlal Nehru, Mahatma Gandhi. So, again, I am interested to share the experience of our nation's Charvaka philosophy and Kanada philosophy. They all taught us a lot of things. But now where are the books and where are the theories of Charvaka and Kanada and others? The Brahminical hegemony should not be allowed here. Then I am interested to quote another word of Jawaharlal Nehru. He had spoken at Allahabad University, the speech on universities. At that time he said, 'a university stands for humanism, a university stands for tolerance, for adventure of ideas and for the search for truth.' With these words, I conclude here. So, Rakesh Sinhaji, we will stand together for tolerance, we will search for the truth. So, opposition against humanism, opposition against *manavata,* we should stand against that together. Thank you, Sir.

---

* English translation of the original speech delivered in Tamil.

PROF. MANOJ KUMAR JHA (Bihar): Mr. Vice-Chairman, Sir, I thank you for giving me this opportunity. Fridays are beautiful. We freely discuss and you also generally don't put your hand frequently on the bell. Thank you so much, Sir. राकेश सिन्हा जी विश्वविद्यालय में मेरे सीनियर रहे हैं। हम दोनों दो ध्रुवों पर खड़े रहते हैं, लेकिन उनकी यह खूबी है कि वे संवाद को विवाद में तब्दील नहीं होने देते हैं। सर, मैं आपके माध्यम से पहला शेर Mover of the Resolution को अर्ज़ करता हूँ:

"नहीं निगाह में मंज़िल तो जुस्तुजू ही सही,
नहीं विसाल मयस्सर तो आरज़ू ही सही,
न तन में ख़ून फ़राहम न अश्क आँखों में,
नमाज़-ए-शौक़ तो वाजिब है बे-वज़ू ही सही।"

सर, यह फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ का शेर था। अब इनको Indian Indic tradition में हम कहाँ रखेंगे या त्याग देंगे, पता नहीं। अब तो फैसला आने वाली पीढ़ियाँ करेंगी। हमारे दोस्त, अमर पटनायक जी ने मामला कुछ आसान किया और कुछ जवाहर सरकार जी ने आसान किया।

माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, बड़ा ही मुश्किल दौर है, myth हिस्ट्री बन जाता है और हिस्ट्री myth बन रही है। अगर आप मिथक और इतिहास का फर्क मिटाने पर आमादा हैं, तो बड़ी मुश्किल होगी। आज तालियां बजेंगी, लेकिन कल ताली बजाने वाले हाथ ही नहीं होंगे। महोदय, Antonio Gramsci का ज़िक्र किया, वे Marxist थे, वे फासिज्म से लड़े। डा. अमर पटनायक जी ने hegemony का ज़िक्र किया, लेकिन एक counter-hegemony होती है जो hegemony को challenge करती है, उसका केंद्र आम तौर पर शिक्षण संस्थान और विश्वविद्यालय होते हैं। मैं समझता हूं कि आज जो भी मेरा observation होगा, वह उसी दृष्टिकोण से होगा कि counter-hegemony का एक प्लेटफॉर्म तैयार किया जाए, जिसमें मैं राकेश सिन्हा जी, परशोत्तम जी और सब लोगों को invite करूंगा।

महोदय, डा. अमर पटनायक जी ने cultural relativism की बात कही, उसके विपरीत एक concept है ethno-centricism - हममें से अधिकांश को यह लगता है कि हम जिस संस्कृति और सभ्यता में पले बढ़े हैं, दूसरों को तौलने का पैमाना भी वही होना चाहिए। यह एक temptation है और कई सभ्यताओं को यह temptation खा गया, लील गया। हमें इस temptation से बचते हुए cultural relativism को हमेशा तरजीह देनी चाहिए, तभी कुछ बात बनेगी।

(**उपसभापति महोदय** *पीठासीन हुए*)

उपसभापति महोदय, मैं समझता हूं कि हम लोग मैकॉले को काफी तंज करके refer करते हैं, लेकिन कभी हम लोगों को यह भी सोचना चाहिए कि दलित बहुजन चिंतक मैकॉले को तंज क्यों नहीं करते हैं, वे क्यों मानते हैं कि मैकॉले ने कुछ द्वार भी खोले? मैं बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकरकी बात कर रहा हूं। Baba was of the view that India's future lies in Western education and

Western institutions. बाबा साहेब पर तो माला पहनायी जाए, उन पर फिल्में बनायी जाएं, लेकिन उनके विचारों को आत्मसात् न किया जाए, क्योंकि बाबा साहेब आपके ethno-centric approach को challenge करते हैं, उसको धूल-धूसरित करने की कोशिश करते हैं। इस तरह के contradictions में मैं समझता हूं कि बाबा साहेब ने स्वयं न सिर्फ इन contradictions का ज़िक्र किया, बल्कि इन contradiction को एक आंदोलन - उन्होंने बिला वजह नहीं कहा था, agitate and educate. Why?Because he knew the kind of education. आप जिस प्राचीन भारत का ज़िक्र कर रहे हैं - हर वह चीज़ जो प्राचीन होती है, वह गोल्डन नहीं होती है। हम सब लोगों को बताया गया कि Gupta period was the golden period of history. जब ग़ौर से पढ़ा तो पता चला कि slavery वहीं से आयी, women के status में deterioration वहीं हुआ। So, through you, Sir, अगर इस सदन को और हम सबको कोई व्यवस्था बहाल करनी है तो the golden period shall be in the future which we shall take; if not possible, we will snatch it. मैं चाहता था कि इस नज़रिये से अपनी बात रखूं।

महोदय, हम अकसर nostalgia में जाते हैं। Nostalgia में कहते हैं कि प्राचीनकाल में ऐसा था, प्राचीनकाल में वैसा था। मैं पेरियार को क्वोट करना चाहता हूं। उत्तर भारत में अभी भी बहुत कम लोग ऐसे हैं, जिन्होंने उनके नाम के सिवाय उनकी रचनाओं को भी पढ़ा हो। सर, लोगों ने उनकी रचनाओं को नहीं पढ़ा है। महोदय, यह एक किताब है, 'सच्ची रामायण' - यह बैन कर दी गई थी।उनकी कई अन्य किताबें भी बैन हुईं। उनकी किताबें बैन होने के बाद जब लोगों ने संघर्ष किया, तो पेरियार के बारे में इलाहाबाद उच्च न्यायलय ने क्या कहा, यह हम सबको जानना चाहिए। राकेश जी, मैं इसे आपके समक्ष रखता हूं,'हमें यह मानना संभव नहीं लग रहा है कि इसमें लिखी बातें आर्यलोगों के धर्म को अथवा धार्मिक विश्वासों को चोट पहुंचाएंगी। लेखक का उद्देश्य जानबूझकर हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने की बजाए, अपनी जाति के साथ हुए अन्याय को दिखलाना भी हो सकता है, निश्चय ही ऐसा करना असंवैधानिक नहीं माना जा सकता है।' यह इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कहा है। पेरियार का क्या मानना था, क्या हमें उसे नहीं देखना चाहिए! बाबा साहेब का क्या मानना था! क्यों ऐसा होता है कि प्राचीन भारत की हमारी संकल्पना - जो हमारे तमिलनाडु के साथी भी कह रहे थे, शिवादासन जी भी कह रहे थे - उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान, यह जो cow belt है, इसकी संकल्पना को ही हम प्राचीन भारत की संकल्पना मानेंगे, तो कैसे होगा, 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'। 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के लिए अगर आप कहते हैं कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत एक है तो सांस्कृतिक विविधता और बहुलवाद के आधार पर बिना ethno-centric approach के हमें आगे बढ़ना होगा। सर, मैं केवल दो मिनट का समय लूंगा।

श्री उपसभापति: झा जी, आप बोलिए।

प्रो. मनोज कुमार झा : सर, मैंने अतीत की उल्टे पांव की यात्रा की बात कही।Critical pedagogy एक चीज़ होती है। Education की कई definitions हो सकती हैं, लेकिन education की ultimate

परिभाषा है - Education should be an instrument for emancipation. उन लोगों को हर तरह के बंधनों से आज़ाद करें। चाहे वैचारिक बंधन हो, धार्मिक बंधन हो या किसी भी प्रकार का बंधन हो।

उपसभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यहां दो चीज़ें refer करना चाहूंगा। दो किताबें हैं। पहली मनीमुग्धा शर्मा ने 'अल्लाह-हू-अकबर' किताब लिखी। उन्होंने अकबर को contemporary contextमें समझने की कोशिश की और दूसरा हमारे Jairam Rameshji की किताब The Light of Asia: The Poem that Defined The Buddha, मैं आग्रह करूंगा कि इन किताबों को पढ़ा जाए। इनसे संदर्भ व्यापक होगा। हम तो यह कहते हैं कि वैश्विक दृष्टिकोण क्या है? विश्वविद्यालय में 'विश्व' शब्द पहले क्यों आता है? ऐसे ही यूनिवर्सिटी का अनुवाद विश्वविद्यालय नहीं हुआ। दर्शन वैश्विक होना चाहिए, Scientific temperament होना चाहिए, अन्यथा प्रो. तुलसीराम जी ने जो आत्मकथाएं लिखीं, वे न लिखनी पड़तीं, ओमप्रकाश वाल्मीकि को 'जूठन' नहीं लिखना पड़ता और रोहित वेमुला को दुनिया से नहीं जाना पड़ता। यह हमारी हकीकत है। मैं यह नहीं कहता कि आपने ही यह हकीकत पैदा की, लेकिन पैदा हुई हकीकत के खात्मे के लिए हमने साझा रूप से कुछ नहीं किया। हम इस हकीकत से comfortable हो गए हैं। अरे, जाति है कि जाती नहीं, स्वीकार कर लिया। यह क्यों नहीं जा रही है? यानी यह privilege का बंटवारा है। जो privileged हैं, उनको खुशी है कि ritual, symbolic बातें बोलें, बाकी बनी रहे जाति। इससदन मेंबैठे बहुत से लोगों को शिक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ा होगा, शायद हममें से बहुतों को नहीं करना पड़ा। राकेश जी को नहीं करना पड़ा होगा, मुझे नहीं करना पड़ा। अंग्रेज़ी में एक कहावत है- There is nothing in a name. हम हिंदुस्तानी हैं। It is not in a surname. नाम में कुछ नहीं है, लेकिन surname में सब कुछ है। Surname ही तय करता है कि कहां तक पहुंचोगे और कहां रोक दिए जाओगे। मैं यह कहना चाहता था कि उसके लिए वैश्विक दृष्टिकोण है। जैसे अप्रैल के महीने में आप बाबा साहेब अम्बेडकर को माला पहनाएंगे, कई आयोजन भी किए जाएंगे, लेकिन यह नहीं सोचेंगे कि John Dewey का बाबा साहेब पर क्या influence था? John Dewey से बाबा साहेब को अलग कर देंगे, तो कुछ हासिल नहीं होगा। फिर यह वही बात हो गई कि मेरे दादा के पास एक हाथी था, हाथी मर गया, लेकिन मैं इस हाथी के सपने में आज भी कविताएं लिख रहा हूं। हमें इस प्रवृत्ति से बचना होगा। मैं फिर कहना चाहता हूं कि Savitribhai Phule ने Macaulay के बारे में क्या कहा, modern education के बारे में क्या कहा, English institution and education के बारे में क्या कहा? Periyar, Savitribhai Phule,Jyotiba Phule, Babasaheb Bhimrao Ambedkar हैं,आप एक साझा सोच देखिए। क्यों हमारे दलित बहुजन, चिंतक उस तरह से नहीं सोचते हैं, जैसा आप सोच रहे हैं, जैसा आपका resolution सोच रहा है।कहीं तो केमिकल लोचा है। ऐसा क्यों हो रहा है, उसको address करने की जरूरत है।

सर, आज भी हमारे यहां quality of education की बात नहीं होती है। अकसर हम आंकड़ों में यह देखते हैं कि इतना penetration हुआ, लेकिन यह नहीं देखते हैं कि गुणवत्ता पर कितना काम हुआ, accessपर कितनी बात हो रही है। अभी कोरोना के दौरान डिजिटल एजुकेशन ने कैसे फिर से privilegedको और privileged बनाया और बाकियों से सब कुछ छीन लिया। अभी research की बात कर रहे हैं और M.Phil खत्म कर दी गयी है। क्या इसका कोई आधार था? New Education Policy

आई। उसके बहुत गाने गाए जा रहे हैं, लेकिन दुख के साथ कहता हूं कि सदन में New Education Policy की चर्चा नहीं हुई। माननीय उपसभापति जी, मैं आपके समक्ष दुख के बारे में इसलिए भी कह रहा हूं, क्योंकि आप बहुत गंभीरता से सुनते हैं। दुख इसलिए भी होता है कि साल-दर-साल मुझसे पहले भी कई लोग बोले होंगे, पिछले सदन में भी बोला होगा, लेकिन हमारी कुछ सामाजिक हकीकत भी है, वह जा नहीं रही है। जब तक वह हकीकत नहीं जाएगी - मैं फिर से एक मिनट का समय लूंगा, मैंने पहले भी सदन में कहा कि मेरे साथ एक स्टूडेंट पढ़ता था और वह बहुत bright student था, उसके दसवीं कक्षा में हमेशा मुझसे अच्छे अंक आते थे। मैंने दसवीं कक्षा के बाद जब पता किया कि वह कहां हैं, तो मुझे यह पता चला कि वह चाय की दुकान खोलकर बैठा है।

4.00 P.M.

वो first generation learner था उसके परिवार में कोई नहीं था। मेरे माता-पिता दोनों प्रोफेसर थे। सर, ज्यादातर संसाधन तय करते हैं, जाति तय करती है, सरनेम तय करता है, अगर इस हकीकत को हम सब स्वीकार करेंगे, तो शायद आज नहीं तो कल, हम इसका निदान खोज पाएंगे।

प्राचीन विश्वविद्यालयों के बारे में आपकी चिंता बहुत अच्छी लगी, लेकिन प्राचीन के लिए आंसू बहाने से पहले जरा हम पहले समकालीन विश्वविद्यालयों को भी देख लें। अगर मैं अपने ही बिहार को, उत्तर प्रदेश को और अलग-अलग राज्यों को देखता हूं, तो वाइस चांसलर्स केअप्वाइंटमेंट का तरीका - फिर मैं यह कह रहा हूं कि यह मत कहिएगा कि आपकी आलोचना कर रहा हूं - वाइस चांसलर काअप्वाइंटमेंट एक खैरात की तरह बंटता है, तो दिलचस्पी इस बात में नहीं है कि विश्वविद्यालय का विमर्श व्यापक हो, विश्वविद्यालय काअपना वाला कहां adjust हो जाए, जब तक यह परंपरा खत्म नहीं होगी, मैं समझता हूं कि दिक्कत रहेगी। राकेश जी, एक phrase मुझे बहुत अच्छी लगी, मैं बधाई ही देता हूं। राकेश जी, मुस्कराइए, आप इतने गंभीर क्यों बैठे हैं? विचारों का स्वराज, यह सुनने में कितना अच्छा लगता है - सचमुच बहुत अच्छा लगता है। आजकल जितने भी ये स्लोगन्स आ रहे हैं। वे सुनने में बहुत अच्छे लगते हैं, उनकी ध्वनि बहुत अच्छी लगती है, लेकिन ध्वनि समझने के लिए उसके अंतर्निहित तत्व को समझें। यह जो विचारों का स्वराज है, इसमें कौन-कौन से विचार होंगे, इसमें inclusion and exclusion criteria क्या होगा, कौन से विचार आपको प्रीतिकर लगेंगे और कौन से अप्रीतिकर लगेंगे, कौन से विचारों को आप कहेंगे कि वे देशद्रोही हैं या देश के खिलाफ विचार हैं, कौन सा विचार ऐसा है, जो देशभक्त विचार है, क्योंकि हम तो यहां देख रहे हैं कि एक कपड़ा भी controversy बन जाता है, जहां आपस में बाड़ खिंच जाती है, जहां तस्वीरें बदल जाती हैं। आपने गांधी जी को quote किया। गांधी जी ने कई दफा प्रार्थना-प्रवचनों में कहा कि मैं अपने घर के दरवाजे-खिड़कियों को बंद नहीं करना चाहता हूं।सर, मैं बस एक मिनट में अपनी बात खत्म कर दूंगा। गांधी जी ने कहा था कि मैं घर के दरवाजे-खिड़कियों को बंद नहीं करना चाहता हूं, तो हम क्यों बंद करना चाहते हैं? हमें नहीं बंद करने चाहिए। Western education, Western institution ने

बहुत सारी चीज़ें दी हैं। मैं यह भी मानता हूं कि democracy का जो स्वरूप पहले था और जो स्वरूप आज है, क्या उसमें फर्क नहीं है? उसमें फर्क है। इसलिए मैं कह रहा हूं कि अपने tradition पर गर्व जरूर होना चाहिए, लेकिन नज़रिया critical होना चाहिए। गांधी जी ने composite nation की बात भी कही थी। And I believe, "The Resolution ignores Western and Asian imaginings of national histories which have gone beyond the boundaries of the nation." हमने west को कितना दिया है, इसकी पड़ताल हो। हमने west को बहुत दिया है, इसलिए एहसास-ए-कमतरी में नहीं सोचना है। मेरा मानना है कि ऐसी व्यवस्थाएं हों, जैसे आपने रिसर्च इन्स्टिट्यूट की बात की है, वह बहुत बढ़िया है, लेकिन वहां भी यह तय होना चाहिए कि exclusion and inclusion criteria क्या है? अगर हम वह नहीं करेंगे, तो Indianness के नाम पर कहीं ऐसा न हो कि एक बहुत संकीर्ण दायरे की सोच में उल्टे पांव की यात्रा करते रहें। उल्टे पांव की यात्रा के साथ सबसे बड़ी दिक्कत है कि आपको पता नहीं होता है कि आप कब खाई में गिर जाते हैं। इन्हीं शब्दों के साथ, मैं इस Resolution पर अपनी आपत्ति दर्ज कर रहा हूं - इसके कुछ तत्वों पर, इसके मर्म पर नहीं। बस व्यवस्थाएं ऐसी हों कि फिर से एजुकेशन कुछ privileged वर्गों के हाथों की मुट्ठी की चीज़ न हो जाए, क्योंकि एजुकेशन ने ही emancipation के लिए काफी कुछ किया है, उसका democratization हुआ है। सर, अगर इस तरह की पद्धतियों से हम आगे चलेंगे, तो वह democratization का प्रोसेस रुक जाएगा। राकेश जी, आखिर में आपके लिए;

"अब भीख मांगने के तरीके बदल गए,
लाज़िम नहीं कि हाथ में कासा दिखाई दे।"

जय हिंद!

श्री संजय सिंह (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली) : महोदय, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण संकल्प पर अपनी बात रखने का मौका दिया, इसके लिए आपका धन्यवाद। जब मैं आ रहा था, तब राकेश सिन्हा जी को मैं टी.वी. पर सुनता हुआ आया। उन्होंने बहुत अच्छी-अच्छी बातें और बहुत बड़ी-बड़ी बातें कहीं। उनके मुंह से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का नाम, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के उदाहरण सुनकर अच्छा लगा। मान्यवर, यही तो भारत है। आज आज़ादी के 75 साल बाद भी हम उस राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की बात कर रहे हैं, उनके विचारों की बात कर रहे हैं, जिनसे पूरी दुनिया में भारत की पहचान बनी। आप अमेरिका चले जाइए, आप रूस चले जाइए, आप लंदन चले जाइए, आप कनाडा चले जाइए, आप आस्ट्रेलिया चले जाइए, आप न्यूज़ीलैंड चले जाइए और वहां लोगों से कहिए कि हम भारत से आए हैं, तो वे भारत के प्रधान मंत्री का नाम शायद बाद में लेंगे, वे भारत के किसी पूर्व प्रधान मंत्री का नाम भी शायद बाद में लेंगे, वे सबसे पहले कहते हैं कि आप गांधी के देश से आए हैं। गांधी का मतलब है अहिंसा, गांधी का मतलब है एकता, गांधी का मतलब है भाईचारा, गांधी

का मतलब है प्रेम, गांधी का मतलब है सामंजस्य से समाज को लेकर आगे चलना। मान्यवर, उस गांधी से पूरी दुनिया में हमारी पहचान बनी।

मान्यवर, आज इतिहास के तथ्यों की अगर पड़ताल हो रही है, तो मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आज़ादी के आंदोलन में बहुत से लोगों ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का साथ दिया, बहुत से लोगों ने नहीं दिया। मान्यवर, आज़ादी के आंदोलन में अलग-अलग विचारधारा, अलग-अलग मान्यता, अलग-अलग धर्म, अलग-अलग जाति के लोगों ने एक लक्ष्य बनाया कि हमें भारत को अंग्रेजों से आज़ाद कराना है और उस एक उद्देश्य को लेकर भारत माता की आज़ादी के लिए सभी अलग-अलग मान्यताओं, धर्मों, जातियों के लोगों ने बापू के नेतृत्व में देश की आज़ादी के आंदोलन में हिस्सा लिया और देश को आज़ाद करवाया।

मान्यवर, मैं इसके साथ यह भी जोड़ना चाहता हूं कि जिस विचारधारा के लोगों ने गांधी जी का साथ नहीं दिया, जिस विचारधारा के लोगों ने अंग्रेज़ों की मुखबिरी की, जिस विचारधारा के लोगों ने आज़ादी के आंदोलन को धोखा दिया, उनको भी गांधी जी ने कभी गद्दार नहीं कहा, कभी देशद्रोही नहीं कहा। आज हम एक ऐसे समाज में रह रहे हैं जहां फिर से आवश्यकता है गांधी की उस विचारधारा को स्थापित करने की, भारत में उस महान साबरमती के संत की सोच को स्थापित करने की। हमारे सत्ता पक्ष के कोई भी मित्र अचानक किसी को भी देशद्रोही बोल देते हैं, किसी को भी टी.वी. चैनल पर बैठकर गद्दार बोल देते हैं, किसी को भी भारत के टुकड़े करने वाला बोल देते हैं। क्या आपको पता है कि ऐसी बातों से किसी के मन को कितनी तकलीफ पहुंचती है, कितना कष्ट पहुंचता है? पूरी दुनिया में जिस हिन्दू धर्म की चर्चा स्वामी विवेकानंद ने की और उनके शिकागो के भाषण को अगर उठाकर आप पढ़ेंगे, तो उन्होंने हिन्दू धर्म में अपनी आस्था का सबसे बड़ा कारण सहिष्णुता को बताया, सबसे बड़ा कारण सभी धर्मों और जातियों को एक साथ लेकर चलने को बताया, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की हमारी विचारधारा को बताया। हमारे हिन्दू धर्म में ही तो लिखा है कि पूरा विश्व हमारा परिवार है। मान्यवर, जब हम कहते हैं कि पूरा विश्व हमारा परिवार है, तो हिन्दू भी हमारे परिवार का हिस्सा है, मुसलमान भी हमारे परिवार का हिस्सा है, सिख भी हमारे परिवार का हिस्सा है, अगड़ा भी हमारे परिवार का हिस्सा है, पिछड़ा भी हमारे परिवार का हिस्सा है। जब हम गर्व से भारत माता की जय का नारा लगाते हैं, तो भारत माता की जय का मतलब 130 करोड़ हिन्दुस्तानियों की माँ की जय का नारा हम लगाते हैं। लेकिन मुझे अफसोस होता है, मुझे बहुत पीड़ा हाती है, मुझे बहुत तकलीफ होती है, जब भारत माता की जय का नारा लगाकर हम किसी जाति के खिलाफ नफरत फैलाने का काम करते हैं, जब भारत माता की जय लगाकर हम किसी धर्म के खिलाफ नफरत फैलाने की बात करते है - भारत माता की जय का मतलब है 130 करोड़ हिन्दुस्तानियों की जय और 130 करोड़ हिन्दुस्तानियों की जय का मतलब है कि तमिलनाडु वाले की भी जय, केरल वाले की भी जय, असम वाले की भी जय, ओडिशा वाले की भी जय, बंगाल वाले की भी जय, यू0पी0 वाले की भी जय, बिहार वाले की भी जय, पंजाब वाले की भी जय, पूरे हिन्दुस्तान की जय - आप यह सोच अपने अंदर विकसित कीजिए। राकेश सिन्हा जी, आप प्रस्ताव लेकर आए हैं। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि आज इतने गंभीर विषय पर इस सदन में चर्चा हो रही है। हम लोग डा0 लोहिया को मानने वाले लोग हैं, हम

समाजवादी आंदोलन से निकले हुए लोग हैं। हमने रघु ठाकुर जी के साथ लम्बे समय तक काम किया है। आदरणीय रघु ठाकुर जी ने हमेशा यही सिखाया -लोहिया के विचारों ने हमेशा हमें शिक्षित और प्रशिक्षित करने का काम किया। वे बताते थे कि किस तरह से किसी धर्म विशेष में आस्था न होने के बावजूद - वह हिन्दू धर्म की मान्यताओं को मानते हों, पूजा करते हों, अर्चना करते हों या न करते हों...लेकिन वही डा. राम मनोहर लोहिया रामायण मेले का आयोजन करते थे, जिसमें रामायण की अच्छी बातों का, अच्छे संदेशों का लोगों के बीच में प्रचार-प्रसार हो और वे अपने जीवन में कैसे बदलाव लेकर आयें। हम रामचरित मानस की चर्चा करते हैं, तो अगर उसकी एक लाइन पर ही हम अपना पूरा जीवन बिता दें, रामचरित मानस की सारी लाइनों को आप पढ़ें, न पढ़ें, उसके विस्तार में आप जायें या न जायें, सिर्फ एक लाइन पर अगर हम अपना पूरा जीवन बिता दें तो हम समझते हैं कि हमारा पूरा जीवन धन्य हो जायेगा। 'सब नर करहिं परस्पर प्रीति' हम आपस में प्यार से रहें, यह हमारा रामचरित मानस संदेश देता है। हमारा हिन्दू धर्म 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करता है, लेकिन आजादी के 75 साल के बाद आज हम कहां खड़े हुए हैं? आजादी के 75 साल के बाद हम किसी के कपड़ों पर सवाल उठाते हैं, हम किसी की भाषा पर सवाल उठाते हैं, हम किसी की जाति पर सवाल उठाते हैं, हम किसी के धर्म पर सवाल उठाते हैं, क्या इस तरह भारत आगे बढ़ सकता है? क्या इस तरह से इस देश का विकास हो सकता है, क्या इस तरह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की विचारधारा पूरी दुनिया में फैल सकती है, नहीं। इसलिए अगर हम गौतम बुद्ध को मानते हैं, अगर हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को मानते हैं, अगर हम हिन्दू धर्म को मानते हैं, तो सबसे पहली प्राथमिकता, चाहे सत्ता पक्ष में बैठे हुए लोग हों या विपक्ष में बैठे हुए लोग हों, चाहे हमारे आपस में कितने भी मतभेद हों - हो सकता है, राकेश सिन्हा जी से हमारे वैचारिक मतभेद हों, हो सकता है कि भारतीय जनता पार्टी से हमारे वैचारिक मतभेद हों, लेकिन भारत की जो संस्कृति है, भारत की जो सभ्यता है, भारत की 'विविधता में एकता, भारत की विशेषता' यह जो पहचान है, इस पहचान को कभी भी हम मिटने नहीं देंगे, आज इस प्रस्ताव के माध्यम से इस बात का संकल्प हमारी सारी राजनैतिक पार्टियों को इस सदन के अन्दर लेना चाहिए। इस प्रस्ताव को पास करते हुए यह संकल्प अपने मन में लेना चाहिए, ईमानदारी से लेना चाहिए। अगर हम लोकतंत्र की बात करते हैं तो हमारा लोकतंत्र क्या है? इसमें अलग-अलग दलों के लोग चुनकर आते हैं, अलग-अलग राज्यों से लोग चुनकर आते हैं, अलग-अलग भाषाओं को मानने वाले लोग चुनकर आते हैं। लोकतंत्र भी तो यही कहता है कि मतभिन्नता हो, आपस में आपके वैचारिक विरोध हों, अलग-अलग मुद्दों पर आपकी अलग-अलग राय हो, लेकिन बावजूद इसके देश के हित में, राष्ट्र के हित में हम सब एक साथ मिलकर काम करें, यह सदन इस बात का प्रतिनिधित्व करता है। भारत की संस्कृति का प्रतिनिधित्व यह सदन करता है। भारत की संस्कृति का, भारत की सभ्यता का, भारत की भाषाओं का, भारत की पहचान का, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के संदेश का प्रतिनिधित्व यह सदन करता है, जहां अलग-अलग राज्यों से, अलग-अलग भाषाओं के, अलग-अलग जातियों के, अलग-अलग धर्मों के लोग मिलकर, चुनकर आते हैं, यहां पर देश के हित में योजनाएं बनाते हैंऔर तमाम मतभिन्नताओं के बावजूद एक साथ मिलकर काम करते हैं - यही भारत का लोकतंत्र है।

जब हम कहते हैं कि 'विविधता में एकता, भारत की विशेषता' तो मैं राकेश सिन्हा जी से पूछना चाहता हूं कि हम इस विशेषता को खत्म करने पर क्यों तुले हुए हैं? क्यों इस विशेषता को समाप्त करने के लिए आमादा हैं? क्यों हम आपस में रोज़ नफरत की बात करते हैं, क्यों हम लोगों के आपस में झगड़े कराने की बात करते हैं? इसे बन्द कीजिए, यह हमारी पहचान नहीं है। यह हमारी संस्कृति नहीं है, जिसका आप आज अपने भाषण में उदाहरण दे रहे थे। क्या उनके उदाहरण से यह देश आगे बढ़ सकता है? उनका काला इतिहास है, क्या उसी काले इतिहास को दोहरा-दोहरा कर, बातें कर करके, उन्हीं बातों को कर के हम इस देश को आगे लेकर जा सकते हैं? आप जब एक नये भारत की कल्पना करते हैं, जब आप श्रेष्ठ भारत बनाने की बात करते हैं तो आज की परिस्थितियों में देश कैसे आगे बढ़ सकता है, इसकी चर्चा करनी चाहिए। कैसे हिन्दुस्तान को नये रोज़गार केसाधन मिलेंगे, कैसे अच्छी शिक्षा मिलेगी, कैसे अच्छे स्वास्थ्य की व्यवस्था होगी, आज हमें इसके बारे में चर्चा करने की आवश्यकता है।

अभी एक फिल्म की चर्चा बहुत तेजी के साथ पूरे देश में है। उस फिल्म की चर्चा आप करते हैं, हमें उस पर कोई आपत्ति नहीं है। फिल्में देखनी चाहिए, फिल्मों के जरिये अगर आपके सामने सच्चाई आ रही है तो सच्चाई आनी चाहिए। अपने प्रस्ताव में मैं तो आज इस सरकार से मांग कर रहा हूं कि जो फिल्म 'The Kashmir Files' है, उस फिल्म को YouTube के जरिये पूरे हिन्दुस्तान में फ्री कीजिए, पूरे देश का एक-एक नागरिक उस फिल्म को देखे। दूरदर्शन पर उस फिल्म को दिखाइये, 2-2, 3-3 बार दिखाइये, लेकिन इसके साथ ही साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि सिर्फ किसी के दर्द और किसी की पीड़ा का मजाक उड़ाकर, किसी के दर्द और किसी की पीड़ा पर सवाल खड़े करके उस पर राजनैतिक रोटियां सेंकने के बजाय आज आवश्यकता इस बात की है कि उन कश्मीरी पंडितों का पुनर्वास करने के लिए आपने क्या किया, यह भी इस सदन को बताइये।

मान्यवर, 1989 में, आपको शायद याद होगा या नहीं, लेकिन जब कश्मीरी पंडितों को निर्ममता के साथ पीट-पीट कर वहाँ से बाहर किया गया, उस समय हमारी भारतीय जनता पार्टी सरकार में थी। ये लोग सत्ता में थे, ये सत्ता में भागीदार थे, वी.पी. सिंह जी प्रधान मंत्री थे। जब कश्मीरी पंडितों को मार-मार कर भगाया जा रहा था, तो आप सत्ता के साथ बैठे हुए थे, खामोश थे। इतिहास यह कभी भूल नहीं सकता। आज इतिहास यह भी नहीं भूल सकता कि आपकी पार्टी के नेता और आपकी पार्टी के जगमोहन जी, जो बाद में केन्द्रीय मंत्री हुए, वे वहाँ के राज्यपाल थे। उनके राज्यपाल रहते हुए कश्मीरी पंडितों को वहाँ से मार-मार कर भगाया गया। इतिहास यह भी कभी नहीं भूल सकता कि इसी सदन में आम आदमी पार्टी की ओर से मैंने कश्मीरी पंडितों के पुनर्वास का मामला उठाया था। कश्मीरी पंडितों के पुनर्वास के लिए 7 वर्षों में आपकी सरकार ने क्या कदम उठाया है, इस पर चर्चा कीजिए, इस पर बातचीत कीजिए। ...**(व्यवधान)**... वह भी एक संस्कृति है। ...**(व्यवधान)**... वह भी एक संस्कृति है। ...**(व्यवधान)**... वह भी एक क्षेत्र की संस्कृति है। ...**(व्यवधान)**... वे भी हिन्दू धर्म को मानने वाले लोग हैं। ...**(व्यवधान)**... सर, देखिए, कश्मीरी पंडितों पर भी इनको समस्या है। ...**(व्यवधान)**... कश्मीरी पंडितों का पुनर्वास भी नहीं करना चाहते। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : प्लीज़, प्लीज़। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय सिंह : सर, यहाँ दूसरे विषय भी आए। ...**(व्यवधान)**... सर, ये कश्मीरी पंडितों को भी नहीं बसाना चाहते। मैं तो पुनर्वास की बात कर रहा हूँ। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : आपने जो कहा, वे उस पर बोलना चाहते हैं। क्या आप उन्हें समय दे रहे हैं? ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय सिंह : मैं तो कश्मीरी पंडितों के पुनर्वास की बात कर रहा हूँ, ये उस पर भी आपत्ति कर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : आपने जो कहा, उस पर Mover of the Resolution कुछ कहना चाहते हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय सिंह : आप नहीं कहना चाहते हैं कि आपसे कुछ नहीं हुआ, यह अलग बात है, लेकिन सुन तो लीजिए। हमारी पीड़ा तो सुन लीजिए। कश्मीरी पंडितों के लिए आपने कुछ नहीं किया, मैंने मान लिया, आप हमारी पीड़ा सुन तो लीजिए। ...**(व्यवधान)**... सर, देखिए, कश्मीरी पंडितों पर भी समस्या है। ...**(व्यवधान)**... ये कश्मीरी पंडितों की पीड़ा नहीं सुनना चाहते। ...**(व्यवधान)**... सर, मैं खत्म कर रहा हूँ। मैं समाप्त कर रहा हूँ।

सर, मैं यह कह रहा हूँ कि आप इस सदन में एक प्रस्ताव पास कीजिए। इस समय यह बहुत चर्चा का विषय है। सारे सांसद, मैं तैयार हूँ, एक साल की 5-5 करोड़ की अपनी निधि, पूरी की पूरी निधि कश्मीरी पंडितों के पुनर्वास के लिए दीजिए, मैं आम आदमी पार्टी की ओर से तैयार हूँ। मैं आपके बीच में यह प्रस्ताव ला रहा हूँ। मान्यवर, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री उपसभापति : माननीय राकेश जी, क्या आप कुछ कहना चाहते हैं?

श्री राकेश सिन्हा : उपसभापति महोदय, मैं जिस विषय को लाया हूँ, मैं कहना चाहता हूँ कि 364 दिन तो हम राजनीतिक भाषण करते हैं, मैं इस सभा से उम्मीद करता हूँ कि हम भारत की ज्ञान परंपरा और वैचारिक औपनिवेशिक दासता से मुक्ति पर बहस करें। मैं चाहता, तो मैं भी 40 मिनट कांग्रेस सहित सभी राजनीतिक पार्टियों को कठघरे में खड़ा कर सकता था, लेकिन यदि ऐसे गंभीर विषय पर राज्य सभा बहस नहीं करेगी, तो इससे अच्छा संदेश नहीं जाएगा। जब हम अपने 10 हजार साल के इतिहास में जो प्रगतिशील चीजें हैं, उनको लाकर भारत की सभ्यतायी पहचान को पुनर्स्थापित करने का एक यज्ञ शुरू कर रहे हैं, जिसमें जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा, क्षेत्र की संकीर्णताओं को मिटाते हुए हम यह काम करना चाह रहे हैं, उस समय यदि राजनीतिक भाषण होगा, तो संभवतः यह विषय को

दिग्भ्रमित करेगा। आज मुझे लगता है कि बाहर बैठे हुए लाखों लोग इस विमर्श को देख रहे हैं। विमर्श में भिन्नता हो सकती है, मत-भिन्नता हो सकती है, लेकिन जिस मत-भिन्नता के आधार पर हम समकालीन राजनीति को उसमें उड़ेलना चाहते हैं, तो निश्चित रूप से उसकी प्रतिक्रिया होगी। आप ऐसी बातें करेंगे, जो कि समकालीन राजनीति की हैं, तो यह ठीक नहीं होगा। मैं समकालीन राजनीति से हट कर बातें करना चाहता था। मैं सदन से यह उम्मीद करता हूँ कि हम विषय पर रहें। विषय के ऊपर जितना मतांतर हो, लेकिन हम उस मतांतर को इस प्रकार प्रकट न करें कि समकालीन राजनीति के तत्वों को लाकर एक बड़े विषय को, एक महान विषय को, के.सी. भट्टाचार्य जी, महात्मा गाँधी, दीन दयाल उपाध्याय जी और राममनोहर लोहिया जी ने जिसकी कल्पना की थी, उसको भटका कर यदि हम अरविंद केजरीवाल के दायरे में सिमटेंगे, तो संभवतः बहस दिग्भ्रमित होगी और फिर टुकड़े-टुकड़े गैंग वाले लोग ऐसे विमर्श को भटकाने की कोशिश करेंगे।

श्री उपसभापति : माननीय शिव प्रताप शुक्ल जी।

शिव प्रताव शुक्ल (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभापति जी, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे इस विषय पर बोलने का अवसर दिया, लेकिन मुझे बोलने का अवसर तब मिला, जब भाई संजय सिंह जी बोल चुके हैं।

मान्यवर, पाश्चात्य विद्वान भारत के संदर्भ में यही कहते रहे हैं कि हमारे देश में शिक्षा व्यवस्था तथा पाठशालाओं को अंग्रेज़ों ने प्रारम्भ किया और अंग्रेज़ों के आने से पहले शिक्षा के मामले में भारत अंधकार में था। स्वतंत्रता के बाद मैकॉले की जो संस्कृति रही, मैकॉले की जो शिक्षा नीति रही, उसको पूरे तौर पर बदल दिया जाना चाहिए था, लेकिन उसको बदला नहीं गया। उसे उसी तरह से लेकर चलने का प्रयास किया गया और जगह-जगह पर इसकी चर्चा भी होती रही।

मान्यवर, अंग्रेज़ और मुस्लिम शासकों के आने से पहले भारत में जो शिक्षा पद्धति रही, उसका मुकाबला संसार में कोई नहीं कर सकता, यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूं। तक्षशिला को भारत का ही नहीं, विश्व का सबसे पहला विश्वविद्यालय माना गया है। ...**(व्यवधान)**... तब प्रो. मनोज कुमार झा नहीं थे।...**(व्यवधान)**... राकेश जी भी नहीं थे।...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति : कृपया आपस में बात न करें।...**(व्यवधान)**... शुक्ल जी, आप चेयर की तरफ देख कर बोलिए।

श्री शिव प्रताव शुक्ल : मान्यवर, जब भारत में तक्षशिला विश्वविद्यालय था, उस समय भारत में 'अनपढ़' शब्द था ही नहीं, सभी लोग कहीं न कहीं, किसी न किसी विधा से जुड़े हुए थे। गुरु का मतलब सिर्फ शिक्षा देने वाला ऋषि या आचार्य ही नहीं होता था, बल्कि समुद्र के किनारे रहने वाले परिवार अपने बच्चों को जहाज निर्माण का काम सिखाने के लिए जहां भेजते थे, वह भी गुरु था, लोहार की शिक्षा देने वाला भी गुरु था, धनुर्विद्या सिखाने वाला भी गुरु था, मल्लविद्या सिखाने वाला

भी गुरु था। गुरु एक परम्परा का नाम था, जिस परम्परा के अंतर्गत सभी लोग अपनी-अपनी विधा की शिक्षा दिया करते थे, प्राचीन भारतीय शिक्षा की पद्धति यही थी।

मान्यवर, यहां यह भी कहा गया कि भारत में स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। यह सही है कि अंग्रेज़ों ने जिस प्रकार की शिक्षा दी, बाद में आदरणीय राजा राममोहन राय जी आए, जिन्होंने स्त्री शिक्षा का प्रचार किया। मैं यहां पर एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि यह वह देश है, जिस देश में गार्गी भी जनक की सभा में बैठ कर याज्ञवल्क्य से संवाद करके इस बात का संदेश देती थी कि यह हमारी भारतीय शिक्षा पद्धति है, जिसमें स्त्रियों को भी शिक्षा पर बहस करने का उतना ही अधिकार है, जितना पुरुषों को है। यह बात गार्गी अपनी विद्वता से समझा रही थी।

मान्यवर, मैत्रेयी मित्र ऋषि की कन्या थी और याज्ञवल्क्य की दूसरी पत्नी थी। उसने भी उस समय में लोगों को शिक्षा देने का काम किया, शास्त्रार्थ करने का काम किया। उस समय स्त्रियों को शिक्षा देने की परम्परा में यह था, जो बालिकाएं थीं, वे ऋषिका कही जाती थीं, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली स्त्रियों को ब्रह्मवादिनी कहा जाता था। अंग्रेज़ों के समय में होस्टल की व्यवस्था हो, चाहे न हो, लेकिन प्राचीन समय में होस्टल के लिए 'छत्रीशाला' शब्द का प्रयोग किया जाता था, जिसमें छात्रों के रहने का प्रबन्ध किया जाता था। जिसमें बालक को अलग और बालिकाओं को अलग रहने की व्यवस्था थी, लेकिन शिक्षा समान रूप से थी, वे साथ-साथ पढ़ने का काम करते थे। गुरुकुल में जहां ऋषि पत्नियां पढ़ाने का काम करती थीं, वहीं ऋषि भी पढ़ाने का काम करते थे।

माननीय राकेश सिन्हा जी ने जो प्रस्ताव दिया है, जिसका हम समर्थन करते हैं, इसका सदन के अनेक लोगों ने भी समर्थन किया है। अगर इस विषय को ठोस अराजनैतिक न बनाया गया होता तो श्री राकेश सिन्हा जी के इस प्रस्ताव पर पूरा सदन एकमत से सहमत होकर कह रहा होता कि यह पारित होना चाहिए, मुझे लगता है कि इसे राजनीति का विषय नहीं बनाया जाना चाहिए।

महोदय, संयुक्त कुटुम्ब की अवधारणा समाज में हमने दी थी, यूरोपियन संस्कृति में संयुक्त कुटुम्ब की बात नहीं है, लेकिन भारतीय परम्परा में संयुक्त कुटुम्ब की बात है। एक माननीय सदस्य कह रहे थे, मैं उनका नाम नहीं लेना चाहूंगा, लेकिन मैं इस बात को जरूर कहना चाहूंगा कि इस देश में जातिवाद को पैदा करने का काम राजनीति ने किया, अपने निहित स्वार्थ पर चलने वाले लोगों ने किया। इस देश में दूसरे विचारों से प्रभावित होने वाले लोगों ने भी यहां के ऋषियों को अपमानित करने का काम किया। अन्यथा मैं यह बात जरूर कहना चाहूंगा कि ...**(व्यवधान)**..

श्री उपसभापति : प्लीज़, आपस में बात न करें।

श्री शिव प्रताप शुक्ल : मनोज जी, यह अलग विषय है, लेकिन मैं यह जरूर कहना चाहूंगा कि क्या परशुराम के बिना केरल की संकल्पना की जा सकती है? हमारे यहां उनके बारे में आज जो बातें होती हैं, जो इधर के लोग करते हैं, वे परशुराम को जाति से जोड़कर बात करते हैं, लेकिन केरल के लोग परशुराम को केरल का निर्माता मानते हैं। परशुराम कहां के थे? उत्तर भारत के परशुराम ने समुद्र से भूमि छीनकर केरल के निर्माण का काम किया था। जब अपने गुरु को सम्पूर्ण जीता हुआ भू-भाग

उन्होंने दे दिया था, तो उन्होंने कहा था कि अब रहने को कहां मिलेगा, तो उस समय उन्होंने अपने परशु का प्रहार करते हुए समुद्र से भूमि लेकर केरल का निर्माण किया था और फिर वहां रहने का काम किया। इस पर भी आप चर्चा करें, लेकिन इस पर इस नाते चर्चा न करें, क्योंकि पाश्चात्य विद्वान आप सभी लोगों के दिमाग पर इस तरह से हावी हैं कि बिना उनकी चर्चा के आप रह ही नहीं सकते हैं। हमें लगता है कि अगर शून्य की परम्परा का निर्माण भारत के जिम्मे आता है कि इसका निर्माण भारत में हुआ, तो भारतीय संस्कृति की महानता की बात भी करनी चाहिए। भारत के विद्वानों के संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत में धर्म को पीछे धकेल दिया। धर्म का मतलब है - धारस्य धर्मः, जो धारण करने के योग्य हो, वह धर्म है। अगर धारण करने के योग्य जो है, वह धर्म है, तो धर्म सापेक्षता तो हो सकती है, धर्म निरपेक्षता का क्या मतलब है - जिसे हम और आप मानें कि यही अच्छा है, वही धर्म है। पूजा पद्धति कभी धर्म नहीं हुआ करती है, पूजा पद्धति अपनी स्थिति होती है। कोई शिव को पूजता है, कोई दुर्गा को पूजता है, कोई राम को पूजता है, लेकिन मनोज जी, एक मानव धर्म भी होता है, जिसकी आप बात कर रहे थे, वह मानव धर्म यह होता है - अगर आप गांव में जाएं और एक बड़ा आदमी एक छोटे बच्चे को चांटा मार दे, तो बिना जाने-सुने लोग यह कहेंगे कि ये उम्र में बड़े हैं, इनको ऐसा नहीं करना चाहिए, इनका यह धर्म नहीं है। इसका यह मतलब है कि एक बड़ा व्यक्ति किसी छोटे व्यक्ति को न मारे, यदि मारता है तो यह उसका धर्म नहीं है। आचरण धर्म है। मान्यवर, इस नाते मैं इस बात को कहता हूँ। माननीय राकेश जी ने जो शुरू किया है - भारत में क्या कहा गया - भारत में जो कहा गया, वह भी मैं आपको बताता हूँः

"न कश्चित कस्यचित मित्रं न कश्चित कस्यचित रिपुः
व्यवहारेण जायन्ते, मित्राणि रिप्वस्तथा।।"

मतलब, न कोई किसी का मित्र होता है, न कोई किसी का शत्रु होता है, व्यवहार से ही मित्र या शत्रु की पहचान होती है। अगर वे व्यवहार करेंगे - यह सदन इसलिए है कि यहाँ पर अपनी-अपनी बात कहिए, उपवेशन के बाद सभी लोग एक-दूसरे के गले में बाहें डाल कर चलने का जब प्रयत्न करेंगे, तो वह मित्रता है। ...**(व्यवधान)**... समापन, सत्र के बाद। लेकिन, जो बात आप यहाँ कहेंगे, वह हृदय से कहेंगे और जब यहाँ से चलेंगे, कंठ में लेकर चलेंगे, तब मित्र नहीं बना पायेंगे। इसलिए हमेशा इस विषय पर विचार करना चाहिए।

(उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) *पीठासीन हुए)*

महोदय, हमारे यहाँ तो स्त्रियों के लिए कहा गया है कि स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे के मित्र की परम्परा में रहें। इस नाते यह कहा गया है किः

"मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति सः पण्डितः।"

मतलब, परायी स्त्री को, वह चाहे किसी की भी स्त्री रहे, उसको माता स्वरूप मानो, माता सद्दश मानो, पराये धन को मिट्टी के समान मानो। सभी प्राणियों में - जिस बात को आप कहते हैं, मानव धर्म केवल यही नहीं है। सभी प्राणियों में भी जो अपने समान लोगों को देखता है, इस प्रकार की संकल्पना भारतीय संस्कृति में की गयी, जिस संस्कृति की बात, जिस शिक्षा की बात माननीय राकेश सिन्हा जी कर रहे हैं। इसी नाते मैं आप सब लोगों के समक्ष इस विषय को रखना चाहता हूँ।

श्रीमन्, मैं गोरखपुर का रहने वाला हूँ। जहाँ मेरा निवास स्थान है, मेरे गाँव का नाम 'रुद्रपुर' है। लोग 'रुद्रपुरी' कहा करते थे। वह 'रुद्रपुर' है। वह गोरखपुर जिले के खजनी तहसील में है। उसको लोग 'छोटी काशी' कहा करते थे। उसे 'छोटी काशी' इस नाते कहा करते थे कि काशी में तो विद्वानों की भरमार है, लेकिन हमारे गाँव में भी इतने विद्वान थे कि उसके बारे में यह कहा जाता था कि यह तो 'छोटी काशी' है। यह पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध था कि यह 'छोटी काशी' है।

मान्यवर, एक शायर ने एक बात कही है। मनोज जी ने कई नाम गिनाये, मतलब जैसे वे इन्हीं लोगों के हों। इन्होंने शायर को ही अपना मान लिया, हमारा नहीं माना, लेकिन एक शायर ने हमें सपोर्ट किया। जब सारी संस्कृतियाँ मिट रही थीं, जब यूनान, पर्शिया, शक, हूण, ये सभी विदेशी संस्कृतियाँ मिट रही थीं और जब उसने भारत की महिमा देखी तब उसने कहा कि:

"यूनान-ओ-मिस्त्र-ओ-रोमां सब मिट गये जहाँ से।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।"

हमारी यह हस्ती जो नहीं मिटती रही है, वह क्या था? हम शिक्षा के द्वारा विश्व गुरु बनने की तरफ चले थे। हम विश्व गुरु बनने गये थे, तो शिक्षा के द्वारा। भारत की शिक्षा ही ऐसी थी। आज जिस बात से प्रभावित होकर लोग विदेशों में अपने बच्चों को पढ़ने के लिए भेजते हैं, लेकिन उस समय की शिक्षा की जो बात भारत में थी, जब वह विश्व गुरु माना जाता था, तब यहाँ का कोई भी बच्चा विदेश में नहीं जाता था, बल्कि विदेश के लोग यहाँ आकर नालंदा या तक्षशिला में शिक्षा अर्जित करते थे और लोग कहते थे कि हम भारत से शिक्षा प्राप्त करके आये हैं। उस समय की बात सोचिए, जब गार्गी के संदर्भ में बात आती है। गार्गी और मैत्रेयी 700 ई.पू. रही हैं और उस समय जब ईसा का कुछ भी नहीं था, तब भी भारतीय संस्कृति सब कुछ थी, जो पूरे विश्व को प्राण देने का काम करती थी। जब मैकॉले यहां आया, तो उसने इस प्रकार की शिक्षा को खत्म करने का काम किया। उसने यहां की व्यवस्था पर प्रहार करते हुए कहा कि भारत को तब तक गुलाम नहीं बनाया जा सकता, जब तक इसकी शिक्षा और संस्कृति को खत्म न किया जाए। यदि हम यहां की शिक्षा और संस्कृति को खत्म करेंगे, तब जाकर भारत को गुलाम बना पायेंगे। मैं बहुत साफ शब्दों में इस सदन में कहना चाहता हूं कि यह सही है कि छोटे-छोटे रजवाड़े और जमींदार लोग भारत को आजादी दिलाने के लिए संघर्ष नहीं कर रहे थे। संघर्ष तो उन्होंने किया था, जो जंगलों में रहते थे, संघर्ष तो उन्होंने किया था, जो रैदासी थे और संघर्ष तो उन्होंने किया था, जो कंठियां बांधते थे और कंठियों का आदर करते थे। इन सब लोगों ने भारत को आजादी दिलाने के लिए संघर्ष किया था। मैं यह नहीं कहता कि अन्य लोगों ने नहीं किया

था, लेकिन एक ऐसा वर्ग था, जो सिर्फ अपनी संपत्ति को बचाने के लिए अंग्रेजों के साथ कार्य करता था तथा उनसे अनेक प्रकार की उपाधियां जैसे राय बहादुर आदि प्राप्त करता था और भारत गुलाम ही रहे, इसके लिए कार्य करता था। जहां तक संस्कृति का अर्थ है, संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। अगर भारतीयता जानी जाती है, तो वह भारतीय संस्कृति के नाते जानी जाती है। इस नाते हम सभी लोग जो यहां हैं, जब भी बहस करें, राजनैतिक बहस जरूर करें लेकिन मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि भारतीय संस्कृति के मर्म पर किसी भी स्थिति में बहस करने का काम न किया करें। हम सावित्रीबाईज्योतिरावफुले का नाम लेकर कह रहे थे कि सावित्रीबाईज्योतिरावफुले ने यह किया था, तो भारतीय संस्कृति का वर्तमान स्वरूप और महत्व यही है। महोदय, ब्रिटिश साम्राज्य आया, लेकिन इस काल की सभ्यता ने हमारी संस्कृति को दबाने का काम किया और हम उसी काम को स्वर्णिम काल मान गये। हमारी संस्कृति जहां दबाई गई, हम उसे स्वर्णिम काल मान गए। वह हमारा स्वर्णिम काल नहीं था। हमारा स्वर्णिम काल तो गुप्त वंश का काल रहा है, चंद्रगुप्त मौर्य का काल रहा है। हम कहते हैं कि जो जीता वही सिंकदर, लेकिन सही अर्थों में सिंकदर को उसकी कूटनीति ने जिताया था, लेकिन 'पुरु' को उसकी वीरता ने जिताया था, इसलिए यदि हम यह कहें कि 'जो जीता वही पुरु या पोरस', तो मैं समझता हूं कि यह सबसे उपयुक्त होगा। इस सभा को इस पर विचार करना चाहिए कि यह भारतीय संस्कृति की स्थिति हो। मान्यवर, ज्ञान के संदर्भ में है:

"यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञा, शास्त्रंतस्यकरोतिकिं।
लोचनाभ्यामविहीनस्य, दर्पणः किंकरिष्यति।।"

यह आप लोगों की स्थिति है। जिस व्यक्ति के पास अपनी प्रज्ञा अर्थात् अंतरात्मा नहीं है, उसे शास्त्रों का क्या फायदा-जैसे कि दर्पण अंधे व्यक्ति के लिए बेकार है। इस नाते हम लोगों को निश्चित रूप से यह बात मानकर चलनी चाहिए। शिवादासन जी, यहाँ आलोचना की गई, लेकिन मैं साफ-साफ इस बात को कहना चाहूँगा कि अगर आज पूरा यूरोप प्रभावित है, तो चैतन्य महाप्रभु से प्रभावित है। कृष्ण भक्ति की जो लहर यहाँ से उठी थी, जिसे भक्तिवेदांत स्वामी ने शुरू किया था, उन्होंने पूरे यूरोप में जाकर भारतीयता दिखाई और वे लोग जो जानते ही नहीं थे, उन्हें भी कृष्ण-कृष्ण, राधे-राधे कहते हुए नचाने का काम कर दिया और सिर्फ नचाया ही नहीं, बल्कि एकदम भाव में नचाया। भारत की संस्कृति भाव की संस्कृति है, उस भाव में रहिए, तो आपको अभाव भी कभी खलेगा नहीं, लगेगा नहीं। राजनीति करने वाले लोगों से मेरी विनम्र प्रार्थना है, हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि अपने विचारों को जरूर रखिए, लेकिन भारतीय संस्कृति को किसी भी स्थिति में नष्ट होने से बचाइए। जातिवाद को जो प्रश्रय दिया जाता है, उसे खत्म कीजिए। एक मानव धर्म होता है, उस मानव धर्म का सबको पालन करना चाहिए। मानव धर्म ही भारतीय धर्म है, बहुत-बहुत धन्यवाद।

DR. AMEE YAJNIK (Gujarat): Sir, I am glad that Professor Sinha has come up with the Resolution making certain requests to the Government. But in the process he has

shown what educational institutions in the post-independent India have given to this country. He is one of them. You studied at the Delhi University. That is what I have learnt. It's in English medium. You did Post Graduation. All your facts relating to *tantra vidya*, historical events, traditions, philosophical traditions, manuscripts, colonial influence, the Vedas, the Bhagvad Gita, the Mahabharat, the Puranas, education before the arrival of the British and after the British, and western education system, I think are the result of your library search and today Google search. This is what education does to a person. It empowers a person. And you have come up with this Resolution after doing that. I would like to add here to your request. I would have been very happy if you had put three prayers in your request to the Government.

You have said that you want a research foundation. Well, I think we all agree with that. We all need research foundation in India. We spent little on research and development. You have also asked for opportunities to be given to the students at the district level, so that they can come up with traditional knowledge and so many other things. In the end, you have said that there should be an organized effort in the country for the attainment of *Swaraj* (self-rule) of ideas. This one request itself, I think, requires seven days of debate. 'Self-rule' given by Mahatma Gandhi needs to be understood in the context of *Swaraj* given by Mahatma Gandhi to the country as well as to the world. I think five minutes would be very little time for me in order to even touch the topic. But I think he forgot three main prayers or requests in all this. He should have said that this House urges upon the Government to provide access to education to the children of this country. 'Access' I think you have forgotten to mention in your Resolution. Then, 'to provide infrastructure, both physical and digital', because we are talking about online classes. We are talking about a pandemic. We are talking about a post-pandemic situation. We are talking about the children who are not able to physically go to schools where schools are not there and the children are waiting for the schools to come. Where there are schools but they are shut, the children are waiting for mobile telephony and digital infrastructure. So I think that is not here. I would have been very happy if the Resolution had mentioned that there should be a provision for *buniyadishiksha*. Mahatma Gandhi's words were *buniyaadishiksha*. Where is that *buniyaadishiksha* in all this? How can you forget to write all these things when you are writing right from Vedas to this day? I think we are in an age where we talk about women empowerment; we talk of girl child; we talk about laws that we have brought forward in this House which empower women, whether within the domestic sphere, within the public spaces or at

work places because we want our women to study and go to work, whether in Government sector or unorganized sector or organized sector or private corporations. We have not been able to provide safety and security. We have passed the laws. But how do we provide safety and security to our girl children who want to go to school? I think these four points were missing in the Resolution and submissions. I think he should have added them.

Now, coming to whatever he has said, all this is already there. Through the length and breadth of this country, if you visit educational institutions, you will find libraries which are equipped with this knowledge. World over, renowned universities have huge sections on India. People have come to India; they have written about India; some people have criticized, but all that is in the framework of education, and that is why you find that there is healthy criticism also; there are points which India should have done, India should not have done, India should have lived like this and India should not have lived like this. Sir, when we talk about colonial times, well, the times were different. I have heard names of philosophers being mentioned here like Antonio Gramsci. But, then, you have to look at the period when Antonio Gramsci wrote that and when he wrote about hegemony. Are we today talking about cultural hegemony? We are a democratic country. Today, we are talking about a country which is one of the largest democracies in the world. We are faced with different kinds of hegemony, into which I will not go because that is not the subject matter of this Resolution. But I am very happy that Shri Rakesh Sinha has come up with this Resolution that by opening the doors of our minds, we can think on these issues. Supposing that I back this Resolution and all that is prayed for is granted, how do we bring our children in the mainstream of education? Where is the infrastructure? Where are the schools? Where are the libraries? Where does the child go? If somebody is listening to me today, that person is not reading the newspaper or reading the Rajya Sabha debates. The person is watching me on Youtube. Sir, we are in the third decade of the 21st century. Rakesh Sinhaji, we are in a digital world. You said that गूगल सर्च कीजिए, आपको हज़ार किताबें मिल जाएँगी। That is the era we are living in. Why can't we think in the progressive direction? You cannot do away with history; you cannot forget history. But then history is nostalgic; you can't live in nostalgia for ever. You have to live in reality. So, what does reality say? Reality says that if you fall down today and something happens, you need to call a doctor. You don't call a person who has traditional knowledge; you don't wait for three days for that person to come to you. You need instant relief.

Sir, I am aware that history has to be part of one's culture. History has to be part of one's country. But you have to learn lessons from history. We need to equip our children, students and people to know from where we have come, from the time we were there in history. India is rich in culture. When I was a student, I also got the benefit of lovely education. I had Gujarati, Hindi and English, and I opted for Sanskrit. I was given a choice of these subjects. Where is the choice given today? You have some fifteen subjects but how do you give that choice? You need to go to a school.

So, Sir, I would like to bring three main points in my submission. One, when we talk about India, we should not forget that there was a colonial rule of 200 years. We fought and got our freedom. What did the visionary Jawaharlal Nehruji said about education? He said that reasoning and rationality are the basis of all learning. Learning shapes, and it plays the role in shaping India's education sector. That is why, it is not restricted to only academia but to economic ambitions and social contributions, your contribution to society. It was his vision for the youth of the country and that is why we had IITs, IIMs and AIIMS. Today, we take too much pride when somebody comes from abroad, who heads the biggest corporation in the world, of Indian origin having studied in IIT India. He is heading a corporate company abroad, we take that pride. We forget the fact that we are unable to provide our students with the same kind of education where they can head corporates or companies which are abroad or whether these are in India. We should not forget that these institutions have given these children and these students to the countries abroad. All of them, who come here, are garlanded, are given all kind of accolades. Where have you studied? You have studied in IIMs and IITs! But I do not know how much they should give back to this country. Jawaharlal Nehru*ji* had a vision and that vision translated into these institutions. That is how our students are making a mark the world over. It is a small world. It has become a global village because of digitalization and information technology. That is what Jawaharlal Nehru*ji* did and not just in the education sector. Let us not forget Lalit Kala Academy and Sahitya Academy. We are talking about literature, we are talking about art and culture. These are the institutions given by our visionaries like Jawaharlal Nehru*ji*. We should not forget. Mahatma Gandhi*ji* said 'Swaraj' or self-rule. Today, when I write something on law and justice, I have to go back to Mahatma Gandhi. Local self governance, local institutions, dependence on your own self, that is what Mahatma Gandhi*ji* meant. *Buniyaadi Shiksha* was the new kind of education he wanted, that you not only become an individual who is

good, who believes in non-violence and truth, but also affect the vicinity. You should not live a life that disturbs others. That is what Mahatma Gandhi*ji* meant by education and that is why his education system we have to take forward, that is, *Swaraj* orself-rule.

Now, coming to decades later on, we brought Right to Education in 2009, put it in the Constitution in the same House. Let every child study. Let every child empower oneself with education to know what is good and bad, what is truth from untruth. That is what 2009's Right to Education did and that is where we stand high, tall, as far as our Constitution is concerned.

There is enough equipment in our libraries, the books. But I would like to bring to the notice of my learned colleague here about what has happened to the education system. You may bring traditional knowledge and I am for it. I am for all the urges which he has made to the Government. Yes, they should be there. We should not forget our past. We should not forget Nalanda. We should not forget Takshashila. We should not forget our Vedas. But what was the contribution? We have to learn whatever is necessary to move forward. We are in a scientific age and we should know what to take, what to understand, from where we come, where we belong and what we are today. We are a product of our history, we should not forget that but that is there. What is the situation today? The New Education Policy has also been brought in the Resolution. What is this policy? Are you going to implement it? Are you going to give all the children of this country education, basic education so that they can move forward as good citizens in the country?

Sir, 66.13 per cent of students dropped out from primary schools in my State in the last two years. In the last three years, girl students dropped out because 18,000 schools do not have classrooms. There is no physical infrastructure. When will you have books? You will have these things you are talking about provided you have physical infrastructure. What do you have in mind to bring the physical infrastructure? You want the children to study from home. You want them to have a mobile phone but what do you have done for this digital infrastructure? You put it all on the families. How are they going to move forward on this education? Take for example, a girl child had to drop out of school in my State because she could not travel to the higher secondary, that is, for the 8th Standard, which was 20 kilometres away. What did the parents tell me? "Madam, we want our daughter to study. We want her to move forward but I cannot let her go alone in the bus. I am worried about her safety and security. I have to work in the fields. My husband has also to work in the fields. How do we trust safety and security?

How do we let her go to study?" That is the dropout rate as far as women and girl children are concerned.

Sir, we talk about all this. We should not forget that when at an international forum, when I am sitting and talking, it takes too much effort for me not to speak about dowry and dowry deaths. I feel bad that in my country, women are burnt alive for dowry. I don't take those datas. I don't speak about that. I feel bad. These are the issues. When education comes in the mainstream, if you empower your children with education, they have access to education, they will know what is this. These things were not there before in our history. When they will read our history, they will say, 'No, it was not there'. How did it creep in? What made it creep into our system? Why did these things come which are not civilized? They are violent. How did they creep into our system? That is what education does. If that education is so enlightening, what is the Government doing? Why is it not giving priority to this, instead of giving priority to several other things? That is what, I think, this Resolution is missing that provide access. Access is on the part of the state. State's Directive Policies are in the Constitution. It is a separate chapter that the State has to provide these fundamental and basic things to the people of the country. That is why the Governments are there. That is why the governance model. If you cannot provide this kind of infrastructure, how will the children have access to these systems? Sir, children and education, if they could understand and they could fight for the rights, where was the need to give them separate rights? Children cannot make up their minds. They cannot think. We have to think on their behalf. The Government has to think on their behalf. The Government wants them to be good citizens. That is why, we need to provide infrastructure, classrooms, benches, food and mid-day meals that these are the books you will need, this is the school bag you will need. This is access to education. All this can be a part of the library. If I can get a data from the Government on the libraries that are existing in our schools, I will be obliged. So many schools don't have libraries, forget about books. We are fortunate that we can access the Parliament Library. We can go to some big universities. He can go to Delhi University, and get access to the libraries. What about the children who want to find out? Do they use WhatsApp and YouTubes to find out all that is not required for education? This is the reason why our children are not able to get the education which is required. Moral science, civic sense, Fundamental Rights, their duties and what is their work? What is their behaviour towards society? How society behaves with them? This is education. Even after all this traditional knowledge, if all these *Vedas,* everything,

children will have access to them provided you give it to them. Let them read and let them decide how much it is important to them, how much it is valuable to them, what is the value of this education, and how will it take them forward. We are talking of going on the Mars! We are talking about countries coming together. But, we are not able to do this at the local level. That was the last point I wanted to make. Sir, one more point that when we are talking about making our children the citizens, I have read a few Sanskrit scripts. I have also read Buddha and the Light of Asia by Shri Jairam*ji*. I have seen several other books. I have read all these philosophers that have been named. But, when it comes to bring practicality to this, to bring it in the practical day-to-day lives, the governance models, the public service arena where we are there, we, Parliamentarians are there, other public figures are there and administrative people are there, where do we translate it into action? How do we translate? It is very good to talk about the Roman Empire and something that happened in the 18th Century and something that happened in the 19th Century, but what is happening in the 21st Century? Are we not feeling ashamed that what is happening to our children, to our girl children and they are feeling unsafe. The parents are feeling unsafe, going out. This is what is required in the Resolution, that is, access to education. Go back to the education model which Mahatma Gandhi*ji* said that we need *Sarvodhya*, we need self-rule, yes, but in the context of what Mahatma Gandhi*ji* said, you cannot twist it. You cannot change it. You cannot modify it. That is what should be done. I will, definitely, be very glad, if Shri Rakesh Sinha*ji* comes with a resolution where he brings this kind of urging to the Government. I would, definitely, support him on such a resolution. Thank you so much.

5.00 P.M.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Now, Shri Prakash Javadekar.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS; ANDTHE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI V. MURALEEDHARAN): Sir, it is a topic in which everyone has taken utmost interest and I suggest that we can discussfor, at least, one more hour, and extend the House's sitting.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): If that is the sense of the House, we can continue.

श्री प्रकाश जावडेकर (महाराष्ट्र) :उपसभाध्यक्ष जी, आज राज्य सभा की ताकत क्या है, यह देश देख रहा है। यहां कितनी अच्छी चर्चा हुई है। राकेश जी ने भारत की ज्ञान परंपरा का विषय लिया और मैंने सभी सदस्यों जैसे जवाहर सरकार जी और बाकी सभी सदस्यों को भी सुना। अपने-अपने मन की बात कहना ही डिबेट होता है और यह डिबेट अच्छी थी। मुझे भी तीन साल शिक्षा विभाग संभालने का मौका मिला। एक दिन हम 11वीं और 12वीं का review ले रहे थे। 12वीं में choice के विषय बहुत होते हैं, लेकिन students कुछ विषय बहुत कम opt करते हैं। अधिकारियों ने कहा कि यह KTPI विषय है, उसमें कम students आ रहे हैं। मैंने कहा कि ये अधिकारी लोग short forms में क्यों बोलते हैं? मुझे इसका पता नहीं चलता है। यह हर किसी की समझ में नहीं आता है, that was Knowledge Traditions and Practices of India (KTPI). मुझे एकदम लगा कि मुझे यह देखना है। मैंने कहा कि पहले मुझे वह किताब भेजो। फिर मैंने वह किताब देखी। वह किताब इतनी अच्छी थी कि अगर भारत की सही पहचान चाहिए, तो उसमें Indian chemistry, Indian metallurgy, Indian astronomy, Indian architecture, Indian trade, Indian arts, Indian maths, Indian medicine, Indian agriculture आदि बहुत सारे aspects थे। यह हमारी ज्ञान परंपरा की एक बहुत ही अच्छी किताब है। फिर मैंने students और schools से बात की। जब मैंने 11वीं की पुस्तक देखी, तो वह लगभग पांच सौ पेज की थी और 12वीं की पुस्तक पांच सौ पेज की थी। बहुत अच्छी किताब तैयार की गई है। सरकार जी, जो KTPI की किताब है, वह सभी सदस्यों को देनी चाहिए, क्योंकि वह बहुत अच्छी किताब है। यह देने के बाद आप समझोगे कि यह भारत की पहचान है। अनेक वक्ताओं ने बताया कि हमारी आज की शिक्षा पद्धति में मैकॉले की शिक्षा पद्धति कैसे आई, उसमें यह मुद्दा आया कि हम अपनी पहचान खो गए। जब मैंने NCERT के साथ बैठक की और जो 15 लोगों का एक बहुत अच्छा संपादकमंडल था, जिन्होंने original किताब तैयार की थी, उनकी सलाह से मैंने कहा कि मैं 11वीं का छात्र हूं, तो मैं 100 मार्क्स के लिए यह 500 पेज की किताब नहीं पढ़ूंगा। इसी का सारा essence लेकर, कुछ details निकाल कर, जिसमें एक भारत की पहचान हो, 200 पेज़ की ऐसी किताब बनाइए। वह बनाई गई और वह भी तैयार है - ग्याहरवीं की भी और बारहवीं की भी। मुझे पक्का विश्वास है, बीच में दो साल कोरोना में गए, लेकिन इसका जितना हम प्रचार करेंगे, मुझे विश्वास है कि बहुत सारे schools, विद्यार्थी, उनके अभिभावक सभी, Indian philosophy उसमें सब है। आप देखिये,it is a beautiful book that I have seen. वह खत्म ही होने वाला था, वही प्रस्ताव था तो हमने उसको पुनर्जीवित किया और मुझे विश्वास है कि आने वाले दिनों में इसका जैसा प्रचलन बढ़ेगा और लोगों को जानकारी होगी, तो भारत की minimum पहचान तो होनी चाहिए। हम जिस देश के हैं, यानि अगर आर्यभट्ट का, वहां यूरोप में जो शोध के लिए CERN की laboratory है, तो उनका नाम लिखा है। वहां अगर उनका नाम लिखा है और उनका अलग एक शिलालेख बनाया है, तो यह हमारे भारत का गौरव है, जिसके बारे में हमें मालूम ही नहीं है। इसे जानने का एक अवसर हमारे पास है। भारत की ज्ञान परम्परा की विशेषता क्या है, भारत की संस्कृति; what Indian civilisation represents! Its diversity, its tolerance, और वही tolerance भारत ने लगातार दिखायी। इतने

विदेशी लोग आए, अपने यहां इतने religions हैं - धर्म परिवर्तन पर उनका मानना है कि कुछ भी हो, हमारे मजहब में सब आना चाहिए। यह Indian civilisation है, जो यह नहीं कहती कि हमारे मजहब में आओ, यह कहती है कि live and let live. यह tolerance की भारत की सबसे बड़ी विशेषता है। अभी चर्चा हुई, तो उसमें क्या है - उसमें ज्ञान परम्परा का मूल हिस्सा है। आस्तिक, नास्तिक - यह भी सबको मंजूर है। इसलिए आप आस्तिक भी हो सकते हैं और आप नास्तिक भी हो सकते हैं, आपको पूजा करनी है, तो करिए, नहीं करनी है, तो मत करिए। This is India. यह ज्ञान होना चाहिए और इस ज्ञान परम्परा की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहां scientific temperament ही है। Britishers ने जान-बूझकर एक conspiracy के तहत इसको ध्वस्त करने का काम किया और आज आपने उसको उजागर करने का काम किया। इन सब भाषणों में एकमात्र भाषण मुझे लगा कि वह भारतीय ज्ञान परम्परा विषय है, यह शायद मालूम नहीं था - हमारे मित्र संजय सिंह ने आज की राजनीति पर भाषण दिया और वे कश्मीर पर बोले। इसलिए कुछ सच्चाई बताने की जरूरत भी है, क्योंकि लोगों के पास एक ही संदेशजाना अच्छा नहीं है। कश्मीर की वास्तविकता क्या है, क्यों 'कश्मीर फाइल' फिल्म को देखने के लिए इतने लोग उमड़ पड़े हैं, यह समझना चाहिए। श्री संजय सिंह जी ने भी कहा कि इसे दूरदर्शन पर दिखाओ, यूट्यूब पर डालो और इसे भारत के हर नागरिक को देखना चाहिए। अगर इसे हर नागरिक को देखना चाहिए, तो दिल्ली में आप इसे टैक्स फ्री क्यों नहीं करते, यही सवाल लोग आपसे पूछ रहे हैं। आपको एक फिल्म टैक्स फ्री करनी थी, उसे आप नहीं कर रहे हैं, लेकिन उसे सभी देखें, यह बात कह रहे हैं। यह अजीब पार्टी है, अजीब लोग हैं - राम का मंदिर यहां पर खड़ा किया, लेकिन वहां राम मंदिर का विरोध करते हैं। सीनियर सिटिज़न्स को फ्री में ट्रेन से अयोध्या ले जाते हैं। ...**(व्यवधान)**...

SHRI JAIRAM RAMESH (Karnataka): Sir, is this discussion on the Resolution? ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: That is what he did. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: He is not even here. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: But, still I have a right to say what was said in the House. मूल कश्मीर का मुद्दा क्या है, इस पर मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहता हूं। मैंने तो ज्ञान परम्परा की बात कही है, मैंने तो KTPI की जानकारी दी है, लेकिन कश्मीर में यह जो narrative चल रहा है कि 1989 में वी.पी. सिंह की सरकार थी, जगमोहन जी वहां पर थे, तो जगमोहन जी वहां पर इंदिरा जी द्वारा नियुक्ति किए गए राज्यपाल थे। जगमोहन जी बाद में बीजेपी में आए, आप जगमोहन जी की Turbulence, जो किताब कश्मीर के बारे में है, उसे पढ़िए। उसमें सब जानकारी है, सब विश्लेषण है, सब analysis है कि कश्मीर में उस समय क्या हुआ था? कैसे फारूख अब्दुल्ला कांग्रेस के सपोर्ट से

मुख्य मंत्री थे और यहां पर राजीव गांधी जी की सरकार थी, तब वहां हिन्दुओं के खिलाफ, पंडितों के खिलाफ एक vicious campaign लगभग साल भर चला। ...**(व्यवधान)**...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, this is not a discussion... ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: No, but this was discussed. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: He is not even here and you are... ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: So, I am reacting. ...*(Interruptions)*... I have every right. ...*(Interruptions)*...

SHRI JAIRAM RAMESH: We are having a good discussion. ...*(Interruptions)*...

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: He referred and that is what I am saying. ...*(Interruptions)*... जयराम जी, बहुत थोड़े में बहुत बड़ी बात कह सकते हैं, मैं वही करूंगा, आप चिंता मत करिए। ...**(व्यवधान)**...

SHRI JAIRAM RAMESH: I can understand his pain and anguish that nowhe is not a Minister. ...*(Interruptions)*...

श्री प्रकाश जावडेकर : मैं वही कर रहा हूं। ...**(व्यवधान)**... वे नहीं हैं, इसमें मेरा दोष नहीं है। मेरा नम्बर अभी आया है, वे बोलकर गए हैं। ऐसा कैसे चलेगा? ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Members, please. ...*(Interruptions)*...

श्री प्रकाश जावडेकर : हमें समझना चाहिए कि यासीन मलिक, जो इस पूरे षड्यंत्र का एक बड़ा हिस्सा था।देश भर में आज उसके बारे में गुस्सा है, उसे सम्मानित किसने किया? उसे हर बार चर्चा में किसने बुलाया? यह हम भूल नहीं सकते। प्रधान मंत्री डा. मनमोहन सिंह अगर यासीन मलिक को एंटरटेन करते हैं तो कैसे चलेगा?...**(व्यवधान)**...

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, the time has been extended up to six o'clock. *...(Interruptions)..* Are we here to listen to this *? *...(Interruptions)..*

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: This is not * *...(Interruptions)..* This is not * What you did was * *...(Interruptions)..*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Members, please.

SHRI PRAKASH JAVADEKAR: What you did in Kashmir was *. *...(Interruptions)..* What I am speaking is not * *...(Interruptions)..*

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Javadekarji, please. *...(Interruptions)..* बहुत अच्छी डिबेट चल रही है।

श्री प्रकाश जावडेकर : मेरा यही कहना है कि यह विषय बहुत अच्छा था, लेकिन इसे डायवर्ट किया गया तो हम क्यों नहीं रिकॉर्ड स्ट्रेट रखेंगे? आज़ादी- आज़ादी के नारे लगे, कश्मीर की आज़ादी होनी चाहिए, 'तुम्हारे कातिल जिंदा हैं,अफज़लहम शर्मिंदा हैं', 'एक अफज़ल मारोगे, हर घर से अफज़ल निकलेगा।' इन नारों का समर्थन किसने किया? संजय जी, आपके नेता ने भी समर्थन किया और आपके नेता ने वहां जाकर भी समर्थन किया।...**(व्यवधान)**...मैं यह बताना चाहता हूं।...**(व्यवधान)**... मैं अपनी बात समाप्त कर रहा हूं। मैं एक मिनट में समाप्त करूंगा।...**(व्यवधान)**...आपके नेता ने भी किया और टुकड़े-टुकड़े गैंग के खिलाफ जो लोगों का गुस्सा है, वही 'The Kashmir Files' में आया है। 'The Kashmir Files' का विषय उन्होंने निकाला है, इसलिए मैं रिएक्ट कर रहा हूं। ये 24 घंटे केवल राजनीतिक बातें सोचते हैं। उन्होंने खुद कहा कि मैं हूं, तो जो खुद को ही anarchistकहते हैं, वे आज हमें देशभक्ति का सबक सिखा रहे हैं। यह तो हद हो गई और इसलिए विषय पर कोई भी चर्चा हो, उसका जवाब सरकार जी ने बोला, एलंगोवन जी ने बोला, बाकी हमारे सब सदस्यों ने बोला है, हमारे मन में उनके प्रति आदर है, क्योंकि यही चर्चा होती है, यही मत, यही अलग-अलग राय आती है, लेकिन विषय छोड़ कर हर बार केवल राजनीति करेंगे तो राजनीति का जवाब राजनीति से ही मिलेगा, यह आपको समझना चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI KUMAR KETKAR (Maharashtra): Sir, given the time constraint, I will be very brief and I will not..

---

*Expunged as ordered by the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): You speak, there is no worry. ...*(Interruptions)*..

SHRI KUMAR KETKAR: I will not get into the political polemics that are dominating the debate for the last couple of hours. I don't support this Resolution because it has fallacious foundation in the narrative and in the argument. For instance, we must recognize the fact that the very discipline of Indology, Mr. Vice-Chairman, Sir, came to India after Europeans came, including the British. Indology became a subject for which Prof. Rakesh Sinha, has taken recourse to. It is actually an academic discipline after the Europeans and British came. So, Dr. Rakesh Sinha must recognize first two things that the idea of modern historiography to which he refers without taking this particular title, also come from British and Europeans, as far as India is concerned. During Vedic times or after that, there is no search or there is no research of Indian philosophy and Indian traditions. So, we are actually following the same Western concepts and Western idiom about which he has very strong words to criticize. While doing that, he has not taken into account the simple synonymity that he uses which is totally wrong and fallacious in the sense that he mixes terms like culture, civilization, traditions, religion, ethos and nation. All these terms are mixed for making a political argument, which is actually covered by some kind of semi-philosophical statement. It is essentially a regressive nationalist defence in the name of ज्ञान परम्परा. I think, it is necessary to understand that these terms don't mean the same thing. For instance, in Indonesia, a majority of the Muslims have names which are like Ramamurthy and Krishnamurthy. Many of the names are so-called Hindu names. There are many temples in Indonesia, and in many places, Ramayana and Mahabharata are performed. Yet, Indonesia is a Muslim country. So, tradition, culture, religion and epics don't necessarily have national boundaries. We must not mix up national boundaries with national cultures and national civilisation. For instance, in Australia, many aborigines are following the Indian lifestyle and Indian customs. That doesn't make them Indian. So, culture, civilisation, tradition, ethics and ethos of what they call 'Indian type' are not necessarily the same and they are not synonymous. So, this is another fallacy, apart from the first fallacy of Indology and historiography.

So much reference has been made about Takshashila, but nobody dare to use the word Pakistan. Takshashila is in Pakistan. That Takshashila is supposed to be our pride, which happens to be in Peshawar, Pakistan. It is necessary to understand that till

14th August, 1947, India meant Pakistan, Bangladesh and perhaps some parts of even Myanmar. That is why when Tilak was arrested, he was at Mandalay, in Rangoon, in Myanmar, and Subhash Chandra Bose was also in Mandalay, which is today a part of Myanmar. So, that was all part of 'British India'. When you talk of Indian culture and Indian past, all that is included here and many people claim that it was right up to Afghanistan. So, cultures don't define national boundaries; civilisation doesn't define national boundaries. Therefore, to use today's political polemics, to define old civilisation, culture and tradition is actually making a big argumentative fallacy.

It is, therefore, necessary to understand the Indological research, if anybody wants to do, it is more than in the British universities, even in Russian universities, and let me tell you, even in the Chinese universities. We may not be studying as much about the Slavic culture or the Chinese culture in our universities but they have big departments on Indology and the so-called Indian culture, on this region's culture, which doesn't define national boundaries.

I think, it is necessary to understand these terms before we make the Resolution. Therefore, since it is a fallacious statement, I don't support this Resolution. Thank you very much.

MESSAGES FROM LOK SABHA- *Contd.*

The Finance Bill, 2022

SECRETARY-GENERAL: Sir, I have to report to the House the following message received from the Lok Sabha, signed by the Secretary-General of the Lok Sabha:-

> "In accordance with provisions of rule 96 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha, I am directed to enclose The Finance Bill, 2022, as passed by Lok Sabha at its sitting held on the 25th March, 2022."
>
> 2. The Speaker has certified that this Bill is a Money Bill within the meaning of article 110 of the Constitution of India."

Sir, I lay a copy of the Bill on the Table.